RNI NO. : MPHIN33094

धार्मिक बाल त्रैमासिक पत्रिका

चहकती चेतना

संपादक - विराग शास्त्री, जबलपुर

अंक - 40 वर्ष-10वां

पंचकल्याणक महोत्सव जैन शासन का सर्वोत्कृष्ट महोत्सव है।

अवश्य पधारिये | **मंगल महोत्सव** | अपूर्व अवसर

मनुहार पाती

भगवान शीतलनाथ के चार कल्याणक से सुशोभित अतिशयकारी भूमि
भोपाल-विदिशा हाईवे पर नवनिर्मित ज्ञानोदय तीर्थ, दीवानगंज जि. रायसेन का

श्री आदिनाथ दिगम्बर जिनबिम्ब

पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव

बुधवार, दिनांक 1 फरवरी से सोमवार, दिनांक 6 फरवरी 2017

प्रतिष्ठाचार्य :
बाल ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री

अध्यक्ष : श्री अजित जैन, बड़ौदा
कार्याध्यक्ष : श्री अशोक जैन, भोपाल
कोषाध्यक्ष : श्री राजेन्द्र मोदी, भोपाल
निर्देशक : श्री रजनीभाई दोसी, हिम्मतनगर
महामंत्री : श्री देवेन्द्र बड़कुल, भोपाल

निवेदक **श्री कुन्दकुन्द-कहान दिगम्बर जैन ट्रस्ट, भोपाल**

कार्यालय : ई 2, 103, अरेरा कॉलोनी, भोपाल म.प्र.

सम्पर्क : 90025030411, 9993354533 फोन : 0755-4278946 Email. kund.kundkahanbhopal@gmail.com

---

अपने बच्चों को विरासत में सम्पत्ति नहीं, संस्कार दीजिये।

जरा विचार तो करो भोगने की शक्ति नहीं है, साथ ले जाने की व्यवस्था नहीं है पर संग्रह की आसक्ति कितनी है

संस्कार बिना की सुविधायें पतन का कारण हैं।

बाल-युवा वर्ग में जिनधर्म के संस्कारों की संवाहक पत्रिका
चहकती चेतना के प्रकाशन के दस वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में मंगल प्रगति की शुभकानायें

शुभकामना प्रेषक

दिगम्बर जैन मुमुक्षु स्वाध्याय मण्डल, रतलाम (म.प्र.)

आध्यात्मिक, तात्विक, धार्मिक एवं नैतिक
बाल त्रैमासिक पत्रिका

चहकती चेतना

प्रकाशक
श्रीमति सूरजबेन अमुलखराय सेठ स्मृति ट्रस्ट, मुम्बई

संस्थापक
आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाऊन्डेशन, जबलपुर म.प्र.

संपादक
विराग शास्त्री, जबलपुर

प्रबंध संपादक
स्वस्ति विराग जैन, जबलपुर

डिजाइन/ ग्राफिक्स
गुरूदेव ग्राफिक्स, जबलपुर

परमशिरोमणि संरक्षक
श्रीमती स्नेहलता धर्मपत्नि जैन बहादुर जैन, कानपुर

परमसंरक्षक
श्री अनंतराय ए.सेठ, मुम्बई
श्री प्रेमचंदजी बजाज, कोटा
श्रीमती आरती पुष्पराज जैन, कानपुर

संरक्षक
श्री आलोक जैन, कानपुर
श्री सुनीलभाई. जे. शाह, भायंदर, मुम्बई

मुद्रण व्यवस्था
स्वस्ति कम्प्यूटर्स, जबलपुर

प्रकाशकीय व संपादकीय कार्यालय
''चहकती चेतना''
सर्वोदय, 702, जैन टेलीकॉम,
फूटाताल, लाल स्कूल के पास, जबलपुर म.प्र. 482002
9300642434, 09373294684
chehakticheta@yahoo.com

चहकती चेतना के पूर्व प्रकाशित संपूर्ण अंक प्राप्त करने के लिये लॉग ऑन करें

www.vitragvani.com

सदस्यता शुल्क - 400 रू. (तीन वर्ष हेतु)
1200 रू. (दस वर्ष हेतु)

क्र.	विषय	पेज

1.	संपादकीय	3
2.	चन्द्रप्रभ जिनालय	4
3.	ऐसा क्यों करते हैं ?	5
4.	ढाई दिन का झोपड़ा	6
5.	वे कौन से मुनिराज थे ?	7
6.	प्रेरक प्रसंग	8
7.	कार्बाइड वाला केला	9
8.	प्यारी कवितायें	11
9.	जैसी गति वैसी मति	12
10.	क्या मूंगफली भी जमीकंद है	13
11.	सबसे बड़ी गल्ती	14
12.	बादशाह अकबर	15-16
13.	कथा पढ़ो पुराण की	17
14.	होटल की रोटी	19-20
15.	तीर्थंकर गीत	21
16.	एक अनोखा पत्र	22
17.	भोजन की बर्बादी	23
18.	पोस्टर दीपावली	24-25
19.	पाठकों की कलम से	26
20.	मेरी भावना	27
21.	परिणामों का फल	29
22.	कर्म का खेल मिटे न रे भाई	30
23.	प्रेरक प्रसंग	31
24.	ताजमहल	32
25.	सदस्य ध्यान दें	33
26.	समाचार	34-35
27	कहान शिशु विहार	37-38
28	सदस्यता फार्म	39
29	शंका समाधान	40
30	जन्म दिवस	41
31	आश्चर्य किंतु सत्य	42
32	गेम - संसार का मकड़जाल	43
33	कॉमिक्स	45-47
34	आभार	48

सदस्यता राशि अथवा सहयोग राशि आप ''चहकती चेतना'' के नाम से ड्राफ्ट/चैक/मनीआर्डर से भेज सकते हैं। आप यह राशि कोर बैंकिंग से ''चहकती चेतना'' के बचत खाते में जमा करके हमें सूचित सकते हैं।
पंजाब नेशनल बैंक, फुहारा चौक, जबलपुर
बचत खाता क्र.- 1937000101030106
IFS CODE : PUBN0193700

चहकती चेतना के सदस्य ध्यान दें

चहकती चेतना के सदस्य क्रमांक 1900 से 2144 तक के सदस्यों की सदस्यता अवधि समाप्त हो गई है अतः उन्हें पत्रिका आगे भेजना संभव नहीं होगा। साथ ही सदस्य क्रमांक **2145 से 2164** तक की सदस्यता अवधि शीघ्र समाप्त होने वाली है। अतः पत्रिका प्राप्त करने के इच्छुक साधर्मी सदस्यता राशि हमारे बैंक खाते में जमा करके अथवा चैक या ड्राफ्ट द्वारा भेजें। **खाता नाम - चहकती चेतना**

बैंक का नाम - पंजाब नेशनल बैंक, शाखा - फव्वारा चौक, जबलपुर

बचत खाता क्रमांक - 1937001010106 IFSC PUNB0193700

सदस्यता शुल्क - 400/- रु. तीन वर्ष हेतु 1200/- रु. दस वर्ष हेतु

राशि जमा करके अपना सदस्यता क्रमांक अथवा अपना पूरा पता हमें 9300642434 पर SMS या What's App करें।

हमारे नये सदस्य

इस योजना के अन्तर्गत 5000/- की राशि में 15 वर्ष की सदस्यता प्रदान की जाती है। जिसमें संस्था द्वारा पूर्व में तैयार समस्त सीडी / साहित्य एवं भविष्य में 15 वर्ष तक तैयार होने वाला साहित्य/सीडी और चहकती चेतना प्रेषित की जाती है।

इसमें **श्री सागर उल्लास संघवी**, बारामती

श्री विकास कुमारजी जैन, विजयवाड़ा आंध्रप्रदेश.

श्री वीर कुमार धन्यकुमारजी दोसी, माण जि. सातारा महा.

श्री राजाभाई जैन, खण्डवा म.प्र.

श्री जीविका वर्धमान जैन, मुम्बई

श्री देवजी भाई केशवजी छेड़ा मुम्बई

सहयोग

11000/- **श्री नरेशजी लुहाड़िया**, दिल्ली द्वारा आगामी गतिविधियों में सहयोग प्राप्त ।

2100/- **डॉ. धनकुमारजी जैन**, सूरत की ओर से सहयोग प्राप्त ।

2100/- **श्रीमति हंसा विजय पामेचा** ओर से सहयोग प्राप्त ।

1000/- **श्रीमति आरती प्रसंग जैन**, खण्डवा

ऐसा क्यों करते हैं -

नारियल क्यों फोड़ते हैं ?

जैन दर्शन के अनुसार सर्वज्ञ परमात्मा वीतरागी होते हैं। वे किसी का भला-बुरा नहीं करते हैं। परन्तु हिन्दू धर्म की मान्यता के अनुसार भगवान सर्वशक्तिशाली हैं और दीन दुखियों की सहायता करते हैं। प्राचीन काल में भगवान को खुश करने के लिये पशुओं की बलि भी दी जाती थी। जैन धर्म में संकल्पी हिंसा का कोई स्थान नहीं है। राजा यशोधर ने आटे का मुर्गा बनाकर बलि दी थी, ऐसे परिणाम से उसकी दुर्गति हो गई थी।

आज धर्म की अधिकांश क्रियाओं में नारियल अवश्य फोड़ा जाता है। यहाँ तक कि कई जैन साधर्मी भी नारियल फोड़कर ही धार्मिक क्रिया को पूर्ण मानते हैं। क्या आप जानते हैं यह परम्परा कैसे प्रारम्भ हुई ? प्राचीन समय में हिन्दू समाज द्वारा पूजन आदि कार्य में पशु बलि का बहुत विरोध होने लगा, फलस्वरूप पशु बलि तो बन्द हो गई परन्तु उसके प्रतीक के रूप में नारियल फोड़ा जाने लगा। इसके पीछे बलि का ही भाव है। नारियल में माथा, जटा अर्थात् चोटी, दो आंखें, पेट और नाक की प्रतिकृति दिखती है। इस कारण ही पशु के स्थान पर नारियल फोड़ा जाने लगा। इसमें नारियल फूटने पर 'फट्' की जो आवाज आती है वह पशु के कपाल फूटने का प्रतीक है। सार रूप में नारियल को फोड़ना संकल्पी हिंसा का प्रतीक है। नारियल फोड़ने के बाद उसका प्रसाद खाने में निर्माल्य खाने का दोष आता है।

इसलिये आप मंदिर अथवा धार्मिक क्रियाओं में नारियल न फोड़ें। भोजन के लिये नारियल फोड़ना अलग बात है। जिनमंदिर में श्रीफल धवल गोला अर्पित करें।

किसके नाम के आगे 1008 लगाया जाता है और क्यों ?

1008 तीर्थंकर अरहंतो के सामने ही लगाया जाता है। तीर्थंकर परमात्मा के पवित्र शरीर में 1008 शुभ लक्षण होते हैं। 1008 लक्षणों में 108 विशेष लक्षण होते हैं और 900 सामान्य लक्षण होते हैं। 108 लक्षणों के नाम - 1. श्रीवृक्ष 2.शंख 3. कमल 4.स्वस्तिक 5.अंकुश 6.तोरण 7. चामर 8.शुभछत्र 9.सिंहासन 10. पताका 11.दो मछली 12. दो कलश 13.कछुआ 14.चक्र 15.समुद्र 16. सरोवर 17.विमान 18.भवन 19. भवन 20.मनुष्य 21. मेरु 22. सिंह 23. बाज 24.धनुष 25. स्त्रियाँ 26. इन्द्र 27. देव गंगा 28. पुर 29.गोपुर 30. उत्तम घोड़ा 31. चन्द्रमा 32. पंखा 33. बांसुरी 34. वीणा 35.ढ़ोलक 36. माला 37. रेशमी वस्त्र 38. दुकान 39.कुण्डल आदि आभूषण 40. फलयुक्त उपवन 41. फसल वाला खेत 42.रत्नद्वीप 43.वज्र 44.पृथ्वी 45.लक्ष्मी 46.सरस्वती 47.कामधेनु 48. वृषभ 49. चूड़ामणि 50.महानिधि 51. कल्पलता 52. जम्बूद्वीप 53.गरुड़ 54 से 80 तक - नक्षत्र 81. तारे 82. राजमहल 83 से 91. नवग्रह 92.सिद्धार्थ वृक्ष 93 से 100. अष्टप्रातिहार्य 101 से 108. अष्ट मंगल द्रव्य । इस प्रकार के तीर्थंकर के 108 लक्षण हुये। शेष 900 लक्षणों के नाम उपलब्ध नहीं हैं।

चन्द्रप्रभ जिनालय

मुम्बई का सबसे प्राचीन तेरापन्थी दिगम्बर जैन मंदिर

मुम्बई महानगर में 1916 में निर्मित श्री चन्द्रप्रभ दिगम्बर जिनमंदिर ने इस वर्ष अपनी स्थापना के 100 वर्ष पूरे कर लिये । यह जिनमंदिर ग्रेड हेरिटेज स्ट्रक्चर्स के अन्तर्गत आता है। इस जिनमंदिर के मूल नायक भगवान चन्द्रप्रभ हैं। यह प्रतिमा 150 वर्ष से अधिक प्राचीन है। साथ ही मूल वेदी पर भगवान शांतिनाथ और भगवान पार्श्वनाथ की प्रतिमायें विराजमान हैं। ये सभी प्रतिमायें भाईवाड़ा गली में श्री सुखानन्द गुरुमुखराय जैन मंदिर से लाईं गईं हैं। यह मंदिर देश के सबसे सुन्दरतम जिनमंदिरों में से एक है। यहाँ तीन वेदियों के साथ अत्यंत सुन्दर स्वाध्याय भवन है। साथ ही इटालियन व मकराने के पत्थरों से सुसज्जित सीढ़ियाँ और फर्श बहुत भव्य लगता है। मुख्य वेदी के चारों ओर खिड़की के काँच पर 24 तीर्थंकरों के चिन्ह अंकित हैं। यहाँ स्वर्ण अक्षरों से लिखित भक्तामर स्तोत्र और ताड़ पत्र पर लिखित अनगार धर्मामृत इस जिनमंदिर की धरोहर है। यहाँ की चित्रकारी 100 वर्षों बाद भी ज्यों की त्यों है। यह जिनमंदिर मुम्बई के भूलेश्वर (जवेरी बाजार के पास) में है। यहाँ जाने के लिये आप छत्रपति शिवाजी टर्मिनस से टैक्सी सुविधा ले सकते हैं। ठहरने के लिये सुखानन्द धर्मशाला और सी पी टेन्क स्थित धर्मशाला उपयुक्त स्थान हैं। इसी जिनमंदिर के पास मुम्बा देवी रोड स्थित श्री सीमन्धर जिनालय के दर्शन अवश्य करें।

प्रेषक - कमलेश जीतमल जैन, मुंबई

अष्टान्हिका पर्व सानन्द संपन्न

जबलपुर - श्री महावीर स्वामी दिगम्बर जिनमंदिर में दिनांक 13 जुलाई से 19 जुलाई तक आयोजित अष्टान्हिका महापर्व अत्यन्त भक्तिमय वातावरण में सानन्द संपन्न हुआ। इस अवसर पर आचार्य कुन्दकुन्द देव प्रणीत प्रवचनसार ग्रन्थ पर रचित प्रवचनसार परमागम मण्डल विधान आयोजित किया गया। इस अवसर पर विशेष आमंत्रण पर इन्दौर से पधारे पण्डित श्री मनीष शास्त्री के मांगलिक व्याख्यानों का लाभ प्राप्त हुआ। विधान की सम्पूर्ण विधि श्री विराग शास्त्री जबलपुर एवं श्री प्रशांत जैन के द्वारा संपन्न कराई गई। इस विधान के मुख्य आमंत्रणकर्ता श्री जिनेन्द्रकुमार श्री जितेन्द्रकुमार जैन परिवार थे।

शिखर श्रुत संवर्धन समिति

164/267, हल्दीघाटी मार्ग, प्रताप नगर, जयपुर - 302033, मो. 89555872717

E-mail : shikhar.shrutsamvardhan@gmail.com

गतिविधियाँ

वर्तमान में समिति द्वारा निम्न गतिविधियों का संचालन किया जा रहा है -

- जैन पाठशाला (स्कूल ऑफ जैनिज्म) का सम्पूर्ण देश में संचालन करना।
- प्रतिवर्ष विशिष्ट विद्वानों को आमंत्रित कर शिखर व्याख्यानमाला का आयोजन।
- प्रतिभावान छात्रों को छात्रवृत्ति प्रदान करना।
- धार्मिक सत्साहित्य का प्रकाशन।
- धार्मिक, सामाजिक गतिविधियों का संचालन।
- पाण्डुलिपियों का संरक्षण।
- आचार्यों के मूल ग्रन्थों पर शोध कार्य करवाना।
- धार्मिक शिक्षण शिविर आयोजित करना।
- सामाजिक, सांस्कृतिक चेतना के कार्यक्रम।

संजय सेठी
अध्यक्ष
मो. 9314134934

डॉ.बी.सी.जैन
मंत्री
मो. 9414769937

विपत्ति का आना पार्ट ऑफ लाइफ है और विपत्ति में साहस नहीं खोना आर्ट ऑफ लाइफ है।

चहकती चेतना पत्रिका के प्रकाशन के गौरवशाली दस वर्ष पूरे होने पर हार्दिक शुभकामनाएं

शुभेच्छुक - जी.सी. जैन, शशि जैन

शैलेष- निधि, सान्निध्य सचिन-श्वेता, सचित्त, सिनी परिवार

टीकमगढ़ म.प्र. मोबा. 9926014061

अजमेर का प्रसिद्ध
ढ़ाई दिन का झोपड़ा
जैन मन्दिर था.......!

राजस्थान के प्रसिद्ध नगर अजमेर में मुस्लिम समाज का विश्व प्रसिद्ध तीर्थ स्थान है। यहाँ मुस्लिम के सूफी संत ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह है। उनकी मृत्यु के बाद उन्हें यहीं दफनाया गया था। ख्वाजा साहब सन् 1161 में भारत आये थे और अजमेर में आकर बस गये। उनका स्वर्गवास 1236 में हुआ। इस दरगाह के पास ही एक मस्जिद है। इसे पिछले 800 वर्षों से ''ढ़ाई दिन का झोपड़ा'' के नाम से जाना जाता है। इस स्थान पहले तीन मंदिर थे, इनमें से एक जैन मंदिर था, यहाँ संस्कृत पाठशाला भी चलती थी।

प्राप्त जानकारी के अनुसार मोहम्मद गौरी को पृथ्वीराज चौहान ने सतरह बार युद्ध में हराया उसके बाद सन् 1192 में अठारहवीं बार मोहम्मद गौरी ने पृथ्वीराज चौहान को हराकर उसकी हत्या कर दी। युद्ध के बाद गौरी विजेता के रूप में अजमेर से निकला। उसने यह मंदिर देखा तो भयभीत हो गया और उसने अपने गुलाम सेनापति को यह मंदिर तोड़कर मस्जिद बनाने का आदेश दिया और यह सारा काम मात्र 60 घंटे में पूरा करने का आदेश दिया ताकि लौटते समय वह और उसकी फौज यहाँ पर नमाज अदा कर सके। गौरी के आदेश पर सेनापति ने तुरन्त यहाँ निर्मित अत्यन्त सुन्दर मंदिर की लगभग 100 प्रतिमाओं के सिर तोड़े गये।मुस्लिम शासकों के विध्वंस का यह पहला प्रमाण था। ये सभी प्रतिमायें बलुआ पत्थर की बनी हुईं हैं। इन प्रतिमाओं के अवशेष अजमेर के राजपूताना संग्रहालय में रखे हुये हैं। ये मंदिर इतने सुन्दर थे कि मंदिर तोड़ने वालों ने इसके लगभग 70 स्तम्भों को नहीं तोड़ा और मंदिर के स्वरूप को मस्जिद में परिवर्तित कर दिया। यह सारा काम मात्र ढ़ाई दिन में पूरा किया गया इसलिये इसे ''ढ़ाई दिन का झोपड़ा'' कहा जाता है। इसे देखने पर इसके प्राचीन कला और मुस्लिमों द्वारा किये निर्माण में स्पष्ट अन्तर दिखाई देता है।

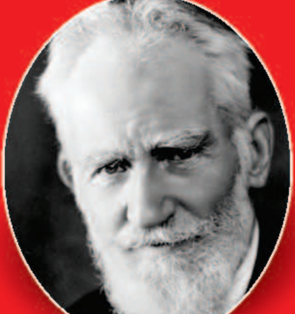

शुभाशीष

प्रसिद्ध लेखक जार्ज बर्नाईशा बहुत बीमार थे। डॉक्टरों ने सलाह दी कि आप को गाय के मांस में दवा खाने पर कुछ लाभ हो सकता है। शा ने उत्तर दिया - जब सभी प्राणी समान हैं तो एक प्राणी को बचाने के लिये दूसरे का घात क्यों किया जाये आखिर एक दिन तो मुझे मरना ही है, मेरी बीमारी में शायद मनुष्य मेरा साथ न दे सकें परन्तु इन मूक पशुओं का शुभाशीष तो मेरे साथ अवश्य रहेगा जो मेरी आत्मा को अच्छी गति देगा। बर्नाईशा जीवन के अंतिम समय तक शाकाहारी बने रहे।

वे कौन से मुनिराज थे ?

1. वे कौन से मुनिराज थे जिनसे अनन्तमति ने ब्रह्मचर्य व्रत लिया था ?

उत्तर - श्री वरदत्त मुनिराज।

2. वे कौन से मुनिराज थे जो जिनसे द्रोपदी का अपमान करने वाले दुःशासन ने मुनि दीक्षा ली थी ?

उत्तर - विदुर मुनिराज ।

3. वे कौन से मुनिराज थे जिन्हें अपनी मृत्यु के 8 दिन पूर्व वैराग्य हो गया ?

उत्तर - श्री चिलला मुनि।

4. वे कौन से मुनिराज थे जिन्होंने विवाह तो किया तो भी बाल ब्रह्मचारी थे ?

उत्तर - जम्बू स्वामीजी।

5. वे कौन से मुनिराज थे जिन्हें आगम में भावी तीर्थंकर लिखा है ?

उत्तर - श्री समन्तभद्र मुनिराज।

6. वे कौन से मुनिराज थे जो एक राज्य में मंत्री थे और बाद में दिगम्बर आचार्य बने और उनके संघ में 500 शिष्य थे ?

उत्तर - चाणक्य मुनिराज।

7. वे कौन से मुनिराज थे जिन्होंने कहा था कि जो कोटि शिला उठायेगा वह ही रावण को मारेगा ?

उत्तर - श्री अनन्तवीर्य मुनिराज।

8. वे कौन से मुनिराज हैं जिन्होंने एक माह के बालक को राज्य सौंपकर मुनि दीक्षा ले ली ?

उत्तर - श्री अनरण्य मुनिराज।

9. वे कौन से मुनिराज थे जिनके उपदेश से प्रभावित होकर सियार ने रात्रि भोजन का त्याग कर दिया?

उत्तर - सागरसेन मुनिराज।

10. वे कौन से मुनिराज थे जिनकी भक्ति में एक हाथी जंगल में उनके पीछे उनके शिष्य की तरह घूमता था ?

उत्तर - श्री कनकसेन मुनिराज। (नवमी सदी में)

11. वे कौन से मुनिराज थे जिनका उपसर्ग राम-लक्ष्मण ने दूर किया ?

उत्तर - श्री कुलभूषण और देशभूषण मुनिराज।

12. वे कौन से मुनिराज थे जो इस युग में सर्वप्रथम मोक्ष गये ?

उत्तर - श्री अनन्तवीर्य मुनिराज।

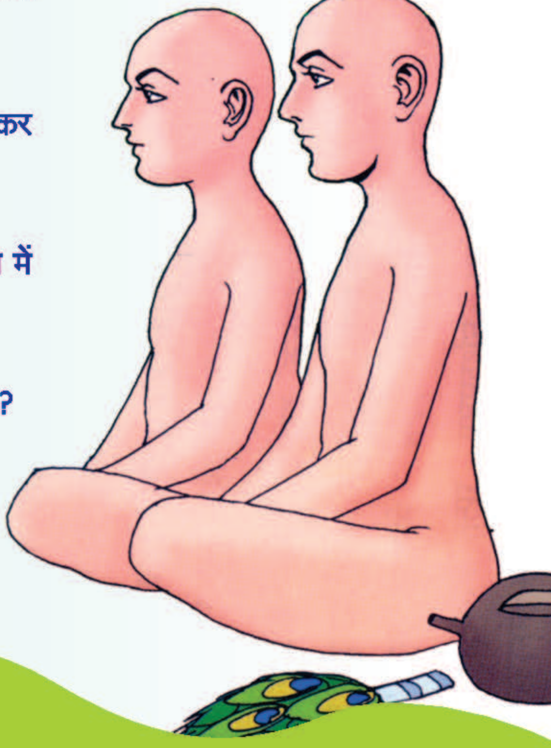

संदेश

प्रेरक प्रसंग

एक दिन स्कूल में छुट्टी होने के कारण दर्जी का बेटा अपने पिता की दुकान पर चला गया। वहाँ जाकर अपने पिता का नाम का ध्यान से देख रहा था। उसने देखा कि उसके पिता कैंची से कपड़े को काटते हैं और काटकर कैंची को पैर से दबाकर रखते हैं और सुई से कपड़े सिलते हैं और सिलने के बाद सुई को सिर की टोपी में लगा लेते हैं। बार-बार यही देखकर उसने पिता से पूछा - पापा! मैं बहुत देर से देख रहा हूँ कि आप कपड़ा काटने के बाद कैंची को पैर से दबाते हैं और सुई से कपड़ा सिलने के बाद उसे टोपी में लगाते हो ऐसा क्यों ?

पिता ने प्रेम से समझाया - बेटा! कैंची काटने का काम करती है और सुई जोड़ने का काम करती है। काटने वाले की जगह हमेशा नीचे होती है और जोड़ने वाली की जगह ऊपर।इसलिये कैंची पैर के नीचे और सुई टोपी में लगाता हूँ।

बेटे ने इन दो पंक्तियों में जीवन का सार समझ लिया।

सोच

शारदा अक्सर पुरानी साड़ियों के बदले बर्तन लेती और बर्तनवाली से बहुत मोल भाव करती। इस बार भी उसने दो साड़ियों के बदले एक स्टील का डिब्बा पसन्द किया।

बर्तनवाली बोली - नहीं दीदी ! ये डिब्बा तीन साड़ियों से कम में नहीं मिलेगा। अरे बाई ! एक बार की ही पहनी हुई साड़ियाँ हैं ये ....। बिल्कुल नई ही हैं। इस डिब्बे के बदले तो ये दो साड़ी भी ज्यादा हैं।

नहीं नहीं तीन साड़ियों से कम में नहीं दूंगी। आप सोच लो दीदी। बर्तनवाली ने जोर देकर कहा।

इसी समय एक भिखारी महिला आई और शारदा के सामने हाथ फैलाकर अपने भूखे होने का इशारा किया। उसका सूट कई जगह से फट रहा था। चेहरा गन्दा सा था और वह बीमार भी लग रही थी। शारदा ने उसे देखकर मुँह बनाया और घर से चार बासी रोटियाँ लाकर दे दी और फिर से बर्तनवाली से बोली - देखो बाई ! दो साड़ी में डिब्बा दे रही हो या साड़ी वापस रख लूँ...।

बर्तनवाली ने चुपचाप साड़ी लेकर डिब्बा शारदा को दे दिया । वहीं बाजू में वह भिखारी महिला रोटी खा रही थी। बर्तनवाली ने उसकी फटी साड़ी देखी और शारदा की दी हुई दो साड़ी में से एक साड़ी उस महिला को दे दी। यह देखकर शारदा को वह डिब्बा बहुत भारी लगने लगा मानो उसे छोटे विचारों का बोझ लगने लगा था।

बाजार में बिक रहा है कार्बाइड वाला केला

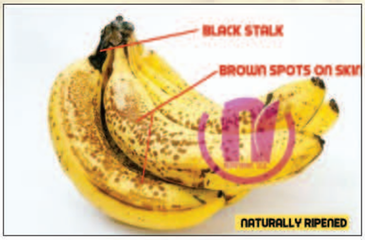

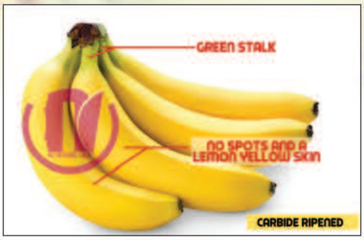

दोस्तो हम सभी को भोजन में केला बहुत पसन्द है और इनका भरपूर स्वाद लेते हैं। पिछले कुछ समय में लगभग पूरे देश में कार्बाइड युक्त पानी में कच्चे केले भिगोकर पकाये जाये रहे हैं। इसके सेवन से कैन्सर या पेट सम्बन्धी बीमारियों की शिकायतें प्राप्त हो रही हैं।

कैसे पहचानें -

यदि केले को प्राकृतिक तरीके से पकाया जाता है तो उसका डंठल काला पड़ जाता है और केले का रंग गर्द पीला हो जाता है। साथ ही केले पर थोड़े बहुत काले दाग भी हो जाते हैं। परन्तु यदि केले को कार्बाइड के पानी में पकाया गया है तो उसका डंठल हरा होगा और केले का रंग लेमन पीला होगा। रंग बिल्कुल साफ पीला दिखाई देगा। इसमें दाग धब्बे नहीं होते और देखने में सुन्दर भी लगता है।

क्या है कारबाईड - कार्बाइड में क्लॉरिफिक वॅल्यू होती है जिसका प्रयोग गैस कटिंग आदि में होता है। पानी में मिलाने पर उसमें उष्मा (गर्माहट) निकलती है जिससे केला जल्दी पक जाता है। इसका प्रयोग करने वाले अधिकतर जानकार लोग नहीं होते हैं। अधिक देर तक कार्बाइड वाले पानी में केले डुबोकर रखने पर अधिक उष्मा प्रवेश कर जाती है जो कि हमारे पेट में भी जाती है।

काबाईड से हानि -
- पाचन तन्त्र में खराबी
- सीने में दर्द
- जी मिचलाना
- पेट में दर्द
- गले में जलन
- अल्सर
- ट्यूमर जैसी गम्भीर बीमारी हो सकती हैं।

इसलिये बाजार से केले लेते समय ध्यान रखें कि केला प्राकृतिक है कि कार्बाइड वाला।

सावधानी ही सुरक्षा है।

दुर्ग निवासी श्रीमती प्रज्ञा कांति जैन को 18-08-2016 को द्वितीय पुत्र रत्न प्राप्त होने पर

चहकती चेतना परिवार की ओर से बधाई

मानुष भव उत्तम मिला, अभिनंदन है आज ।
सचित स्वयं में रम रहो, मिले स्वयं साम्राज्य ।।

DAFTER™

Mfg. & Dealer in :

- School Bag
- College Bag
- Laptop Bags
- Travelling Bags
- Trekking Bags
- Trolly Bags
- Corporate Gifting
- Ladies Purses

45, Magan Baug, Sunmill Rd, Lower Parel (W) Mumbai - 13

E-mail : dafterluggage@gmail.com Mob. 9967424231

MUKTI JEWELS

कुन्दन ज्वेलरी

Gr.wt:58.21 ग्राम

नेट वजन: 39.11 ग्राम

फर्क: 19.10 ग्राम

आप बचत करते हैं करीब ₹ 36000 की

कुन्दन ज्वेलरी नेट वजन से खरीदने में ही समझदारी है।

डायमंड ज्वेलरी

सर्टिफाइड E/F कलर एवं VVS शुद्धता के डायमंड्स से बनी आकर्षक ज्वेलरी सबसे कम दामों में !!!

पोलकी ज्वेलरी

गारन्टेड 22kt. सोने से बनी पोलकी (अनकट डायमंड) ज्वेलरी की सबसे विशाल श्रृंखला पूरी मुंबई में !!!

off #2, Atlanta, Evershine Nagar, Malad (W), Mumbai 400064 PH. 022-28820839 divya.creations@yahoo.com

सुनो-सुनो ....

सुनो-सुनो भाई पाप पाँच हैं, परमेष्ठी भगवान पाँच हैं ।
पाँच पाप को तजना है, पंच प्रभु को भजना है ।।
इनसे ही दुख नशता है, सुख का मारग मिलता है ।
होने योग्य सहज ही होता, स्वाश्रय से ही शिवसुख होता ।।

- बाल ब्र. रवीन्द्रजी 'आत्मन'

देवदर्शन

मेरे प्रभुवर अच्छे हैं, मैं निश-दिन शीश झुकाता हूँ ।
मेरे मुनिवर सच्चे हैं, मैं इनकी सेवा करता हूँ ।।
जिनवाणी माँ ही माता है, जो मेरे मन को भाती है ।
इनकी शरण में जो भी आता, परम सुखी वह हो जाता ।।

दादा की बात

चिन्टू मिन्टू अक्सर लड़ते, बात-बात में खूब झगड़ते।
चिन्टू ने मिन्टू को पीटा, बाल पकड़कर खूब घसीटा।।
मिन्टू ने चिन्टू को पकड़ा, पटक-पटक धरती पर रगड़ा।
दोनों के ही सिर झन्नाये, दोनों के दादाजी आये।।
लड़ने के सब दोष गिनाये, प्रेम मित्रता के गुण गाये।
फिर दोनों का मेल कराया, चिन्टू मिन्टू ने सुख पाया।।

- ब्र. सुमतप्रकाशजी जैन

जैसी गति-वैसी मति

1. क्या हम वर्तमान में मनुष्य होकर भी देव कहला सकते हैं ?

उत्तर - हाँ। जो जीव मनुष्य होने पर भी मंद कषाय रखते हैं, जिनके परिणाम विशुद्ध हैं, सदा सभी जीवों के प्रति दया, समता भाव रखते हैं वे देव जैसे ही हैं।

2. किन परिणामों के फल में जीव अंधा होता है?

उत्तर - किसी को बुरे परिणामों से देखना, किसी व्यक्ति की सुन्दरता देखकर ईर्ष्या करना, अपनी आंखों का दुरुपयोग करना आदि अनेक परिणामों के फल में जीव अंधा होता है।

4. किन परिणामों के फल में जीव नंपुसक होता है?

उत्तर - किसी पुरुष द्वारा स्त्री का वेश बनाकर या किसी स्त्री द्वारा पुरुष का वेश बनाकर लोगों का मनोरन्जन करना, अधिक शृगांर करने का भाव, पशुओं को पीड़ा पहुँचाने के परिणाम, नपुंसक व्यक्तियों को देखकर उनका उपहास करने आदि के परिणाम से जीव नंपुसक बनता है।

5. किसी माँ के गर्भ में आने वाला जीव पुण्यहीन है इसका अनुमान कैसे लगता है ?

उत्तर - गर्भ में आने पर माता-पिता संकट में हों, अभक्ष्य भक्षण की इच्छा होना, झगड़े के भाव होना, धर्म में मन नहीं लगना आदि विपरीत परिणामों से ज्ञात होता है गर्भ में आया हुआ जीव पुण्यहीन है।

6. किन परिणामों के फल में भाई-भाई का विरोधी हो जाता है ?

उत्तर - दो भाईयों का परस्पर लड़ता देखकर खुश होना, झगड़े वाले नाटक / फिल्म देखकर आनन्द मनाने के परिणाम से, दो भाईयों को आपस लड़ाने के परिणाम से भाई-भाई का विरोधी हो जाता है।

7. किस परिणामों के फल में कम उम्र ही बच्चे के माता-पिता का वियोग हो जाता है?

उत्तर - पूर्व में या वर्तमान में पशु-पक्षियों को पिंजरे में कैद करके रखने से, किसी जानवर को उसकी माँ से दूर करने के परिणाम किसी बच्चे का अपहरण करने के परिणामों से अथवा किसी के पुत्र वियोग को देखकर आनन्द मानने से स्वयं के माता-पिता का जल्दी वियोग हो जाता है।

8. किन परिणामों के फल में मनुष्य को आजीविका आदि की चिंता नहीं होती और भरपूर धन मिलता है ?

उत्तर - पूर्व में धर्मात्मा जीवों को देखकर उनकी आजीविका की स्थिरता में सहयोग करने से, अनाथों को, विधवाओं को, जरुरतमन्द साधर्मियों को सहायता करने के परिणाम से अच्छी आजीविका सहज ही मिलती है। घायल प्राणियों की सेवा करने, दूसरे न्याय पूर्वक आजीविका करने वाले लोगों की अनुमोदना के परिणाम से भरपूर धन मिलता है।

क्या मूंगफली भी जमीकन्द है.......?

वीतरागी सर्वज्ञ जिनेन्द्र परमात्मा की वाणी में आलू, प्याज, गाजर, मूली, गाजर, शकरकन्द, शलगम जैसे जमीकन्द में अनन्त जीव राशि बताई गई है। इन्हें कन्दमूल भी कहा जाता है। भगवन्तों के अनुसार आलू में अनन्तकाय अर्थात एक ही शरीर में अनन्त जीवों का वास बताया है। सुई की नोक बराबर आलू के रस में अनन्त जीव राशि होती है। इनके सेवन से महापाप लगता है। जैन धर्म के अतिरिक्त अन्य हिन्दू ग्रन्थों में भी जमीकन्द खाने का निषेध है। वैज्ञानिक दृष्टि से जहाँ अंधेरा होता है वहाँ भरपूर जीव राशि होती है। कोठरी, जमीन के नीचे, भरे हुये पानी जैसे स्थानों में छोटे-छोटे सूक्ष्म जीव पैदा होते हैं। जहाँ सूर्य का प्रकाश नहीं पहुँचता वहाँ ऐसे अनन्त जीव होते हैं। ये सारे कन्दमूल जमीन के नीचे उत्पन्न होते हैं।

प्रश्न - मूंगफली भी जमीन के नीचे होती है, फिर हम मूंगफली भी जमीकन्द होने से खाने लायक नहीं होगी ?

समाधान - मूंगफली जमीन के नीचे ही होती है परन्तु मूंगफली में तेल की पर्याप्त मात्रा होने के कारण उसमें जीव पैदा नहीं हो सकते। अपने परिवार में भी महिलायें दालों में तेल लगाकर रखती हैं ताकि जीव न पैदा हो जायें। आलू आदि में तेल नहीं है जो जीवों की उत्पत्ति को रोक सके।

प्रश्न - हल्दी और अदरक भी अभक्ष्य हैं तो फिर उन्हें सुखाकर क्यों उपयोग में लेते हैं इस तरह आलू के चिप्स भी खा सकते हैं क्या ?

समाधान - स्वास्थ्य की दृष्टि से हल्दी और सौंठ का कम मात्रा में उपयोग किया जाता है। इनके उपयोग से अनेक बीमारियाँ उत्पन्न ही नहीं होतीं। हल्दी और सौंठ प्राकृतिक रूप से सूखती है। सूखने के बाद उसमें जीव राशि नहीं होती। परन्तु आलू को कृत्रिम रूप से सुखाकर ही चिप्स बनाये जाते हैं। सौंठ और हल्दी तो स्वास्थ्य के लिये आवश्यक है आलू चिप्स नहीं। दूसरी बात हल्दी और सौंठ से पेट नहीं भरा जाता, न उसमें आसक्ति होती है। परन्तु आलू के चिप्स लोग स्वाद के लिये ही खाते हैं। इसमें आसक्ति अधिक होने से विशेष पाप बंध होता है।

मोनिश जीवन मनुज का, महाभाग्य से पाय।
ऐसा कार्य करो अब, जन्म-मरण नश जाय

मोनिश विपुल दोशी, नातेपुते महा. 4 नवम्बर 2016

जिन मत पर श्रद्धा करो, तज कषाय का अंश ।
सिद्ध स्वरुपी आत्म हो, श्रद्धा करो हिदांश ।।

हिदांश जितेन्द्र जैन, बांसवाड़ा, राजस्थान 5 नवम्बर 2016

13 लाख करोड़ की कम्पनी का मालिक बोला - Alibaba Group 阿里巴巴集团

इस कम्पनी को खोलना जीवन की सबसे बड़ी गल्ती

आज दुनिया का हर युवा अमीर बनना चाहता है, हर कोई अम्बानी जैसा बनना चाहता है। पर क्या रतन टाटा, अनिल अम्बानी, मुकेश अम्बानी, अजीज प्रेमजी जैसे कोई धनवान व्यक्ति ये कह सकते हैं कि इन बड़ी कम्पनियों ने मेरी शांति छीन ली है...। लेकिन ई रिटेलर कम्पनी अलीबाबा के मालिक और चीन के दूसरे सबसे अमीर व्यक्ति जैक मा ने एक इंटरव्यू में कहा कि अली बाबा कम्पनी को खोलना मेरे जीवन की सबसे बड़ी भूल थी। आपको बता दें कि अली बाबा कम्पनी की वैल्यूशन 13 लाख करोड़ रुपये है। इसमें जैक मा की स्वयं की नेटवर्थ 1.6 लाख करोड़ रुपये है।

एक इंटरव्यू में जब उनसे पूछा गया कि आपके जीवन की सबसे बड़ी गल्ती क्या है तो उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा कि 1990 में अलीबाबा कम्पनी की शुरुआत करना। इसका कारण पूछने पर उन्होंने बताया कि मैं तो एक छोटा सा व्यापार करना चाहता था, मुझे नहीं पता था कि अलीबाबा इतनी बड़ी कम्पनी बन जायेगी। इस कम्पनी का इतना बड़ा होना मेरे लिये मुसीबत बन गया है। इसका कारण पूछने पर उन्होंने बताया कि मैं हमेशा शांति की जीवन जीना चाहता था। पर आज मैं किसी भी देश के राष्ट्रपति से अधिक व्यस्त रहता हूँ। मेरा कोई व्यक्तिगत जीवन नहीं रह गया है। यदि मुझे दुबारा मानव जीवन मिला तो मैं इस तरह कोई बिजनेस नहीं करूँगा। मैं अपनी जिन्दगी अपने लिये जीना चाहता हूँ दूसरों के लिये नहीं।

ये मानव जीवन महाभाग्य से मिला है, इसका लक्ष्य भौतिक साधनों की प्राप्ति नहीं बल्कि आत्म शांति होना चाहिये। हम जरूरतों के लिये कार्य करें विलासिताओं के लिये नहीं।

जिनवर की स्तुति अहो,
निज का ही हो ध्यान।
जिनवर के पथ पर चलो,
करना निज कल्याण ।।
स्तुति सचिन जैन, पुणे 15-10-2016

जिनपथ पर आरोहण करो
आरोही आपका नाम।
केवलज्ञान आदित्य से
हो निज में विश्राम।।
आरोही आदित्य जैन, कोलकाता 29-09-2016

बादशाह अकबर का जैन धर्म में प्रचार में योगदान

भारत के सर्वकालीन महान शासकों में से एक बादशाह अकबर का जैनधर्म के सिद्धान्तों की रक्षा और प्रचार-प्रसार में बहुत बड़ा योगदान है। सन् 1555 में हुमायूँ दिल्ली का बादशाह बना। परन्तु एक वर्ष में ही हुमायूँ की मृत्यु हो गई। इसके बाद उसके पुत्र मुगल सम्राट अकबर ने दिल्ली का राज्यभार संभाला।

बादशाह अकबर उदार हृदय, न्याय-प्रिय, विद्वानों का आदर करने वाला था। उसके राज्यकाल में देश का बहुत विकास हुआ। बादशाह अकबर ने हिन्दू और जैन तीर्थों पर पहले के शासकों द्वारा लगाये गये कर (Tax) को समाप्त कर दिया। बादशाह अकबर के समय अनेक जैन भी राजकीय पदों पर आसीन थे। आगरा के प्रसिद्ध विद्वान पण्डित बनारसीदासजी अकबर के प्रिय मित्र थे और उनके साथ अधिकांशतः शतरंज खेला करते थे। बनारसीदास के संसार से उदास होने उनके निवेदन पर सहज ही दरबार के कार्य मुक्त कर दिया। उसी समय राजधानी आगरा में दिगम्बर जैन मंदिर का निर्माण किया गया और बहुत बड़े समारोहपूर्वक जिनमंदिर में जिनबिम्ब विराजमान किये गये। बादशाह के आदेश से ही पूरे देश में पर्यूषण पर्व के अवसर पर मांस विक्रय पर प्रतिबंध लगाया गया। आगरा के पास शौरीपुर और हथिकन्त में और मुख्य राजधानी दिल्ली में नन्दिसंघ के भट्टारकों की गद्दियाँ थीं। अकबर के राज्यकाल में लगभग 25 जैन साहित्यकारों और कवियों ने साहित्य रचना की। अनेक प्रभावी सन्त हुये, जिनमंदिरों का निर्माण हुआ। लगभग 100 वर्षों बाद देश में जैनों को सुख और शान्ति का आभास हुआ। श्वेताम्बर सन्त आचार्य हरिविजय सूरि विशेष निमन्त्रण पर आगरा पधारे तो अकबर ने उनका भव्य स्वागत किया। आचार्य के मुख से जैन सिद्धान्तों को सुनकर अकबर बहुत प्रभावित हुआ और उन्हें जगतगुरु की उपाधि दी। सम्राट के दरबार में विजयसेन गणि जैन आचार्य ने 'ईश्वर विश्व का कर्ता-हर्ता नहीं है' विषय पर भट्ट नाम के ब्राह्मण पण्डित को वाद में पराजित करके सवाई की उपाधि प्राप्त की। यति भानुचन्द ने सम्राट के लिये फारसी भाषा में सूर्य सहस्रनाम की रचना की और इससे प्रभावित होकर अकबर ने फारसी की सर्वश्रेष्ठ उपाधि 'खुशफहम' प्रदान की।

एक बार अकबर को सिर में असहनीय दर्द हो गया तब यति भानुचन्द के उपाय से सिरदर्द ठीक हो गया। इस खुशी में अकबर के समर्थकों ने कुर्बानी देने के लिये पशु एकत्र किये। इसकी जानकारी जैसे ही अकबर को मिली तो सभी पशुओं को छोड़ देने के आदेश देते हुये कहा - मुझे सुख हो, इस खुशी में दूसरे प्राणियों को दुःख दिया जाये यह सर्वथा अनुचित है।

एक बार मुनि शान्तिचन्द्र के व्यक्तित्व से अकबर बहुत प्रभावित थे। एक बार मुस्लिमों के मुख्य त्यौहार ईद के एक दिन पूर्व वे उनके राज्य से जाना चाहते हैं। अकबर के कारण पूछने पर उन्होंने बताया कि यहाँ ईद पर हजारों निर्दोष पशुओं का वध होने वाला है। मुनि ने मुस्लिम धर्म के मुख्य ग्रन्थ कुरान की आयतों से सिद्ध किया कि खुदा कुर्बानी के मांस और खून से प्रसन्न नहीं होता बल्कि रोटी और शाक खाने से रोजे कबूल होते हैं। इसके लिये इस्लाम के अन्य ग्रन्थों को भी दिखाया। यह सुनकर अकबर ने घोषणा कर दी कि ईद पर किसी भी जीव का वध नहीं किया जायेगा। सन् 1592 में जिनचन्द्रसूरि के कहने पर खम्भात की खाड़ी में मछली पकड़ने पर रोक लगा दी और आषाढ़ की अष्टान्हिका में पशु वध बन्द करवा दिया।

अकबर के पुत्र शाहजादे सलीम की पुत्री का जन्म होने पर ज्योतिषियों ने नक्षत्र अशुभ बताया। तब सम्राट ने विशेष मंत्रियों से परामर्श करके कर्मचन्द बच्छावत को पूजन करने को कहा। कर्मचन्द ने तीर्थंकर सुपार्श्वनाथ की प्रतिमा को बड़े समारोह पूर्वक अभिषेक-पूजन किया और शान्तिविधान किया। पूजन की समाप्ति पर सम्राट अकबर अपने परिवार सहित वहाँ आया और अभिषेक का गंधोदक अपने माथे पर लगाया और जिनमंदिर को दस हजार स्वर्ण मुद्रायें भेंट कीं। उन्होंने गुजरात के सूबेदार आजमखाँ को फरमान भेजा कि मेरे राज्य में जैनों के तीर्थों, मंदिरों और मूर्तियों को कोई व्यक्ति किसी प्रकार की हानि न पहुँचाये। जो इस आदेश का उल्लंघन करेगा उसे भयंकर दण्ड दिया जायेगा। मेड़तादुर्ग के शिलालेखों के अनुसार अकबर के शासन में वर्ष में लगभग 150 दिन सम्पूर्ण राज्य में पशु हिंसा का निषेध घोषित हो गया था। इन दिनों किसी पशु-पक्षियों की हत्या करने पर मृत्युदण्ड का प्रावधान कर दिया गया।

अकबर ने मांस-शराब-जुआ का त्याग कर दिया था। उसके मुंह से हिंसक वचन नहीं निकलते थे। पण्डित बनारसीदासजी ने लिखा कि जौनपुर में जब अपनी किशोर अवस्था में मैंने अकबर की मृत्यु का समाचार सुना था तो मैं बेहोश हो गया । 1580-81 में अकबर को जैन आचार-विचार को स्वीकार करने के परिणाम हुये।

पुर्तगाली पादरी जेसुइट पिन्हेरो के प्रत्यक्ष देखा और अपने अनुभव के आधार एक पत्र में लिखा कि अकबर को जैनधर्म पर बहुत श्रद्धा है। वह जैन गुरुओं का बहुत आदर करता है। वह जैन नियमों को पालन करता है, जैन विधि से आत्मचिन्तन में लीन रहता है। इस कारण मुस्लिम मुल्ला और मौलवी उनसे बहुत नाराज रहते हैं। दिल्ली का प्रसिद्ध लालमंदिर इसी सम्राट के कार्यकाल में बना।

सन् 1577 में एक जिनमंदिर तोड़कर मस्जिद बनाई गई तो अकबर के आदेश से मस्जिद तोड़कर फिर से जिनमंदिर बनाया गया।

इस तरह बादशाह अकबर के राज्यकाल में जैनधर्म का बहुत विकास हुआ।

Happy Birthday

जैन जगत की नारियां,
होती जगत प्रसिद्ध ।
राजवी ऐसा काम करो,
बनना अब तुम सिद्ध ।।
राजवी मेहुल शाह, मुंबई 2-12-2016

अनंत गुणों का कुंज तू,
करना भेद विज्ञान ।
जन्म दिवस पर यही भावना,
जीवन बने महान ।।
कुंज मेहुल शाह, मुंबई 27-11-2016

कथा पढ़ो पुराण की -

मुनि निंदा का फल

अयोध्या नगर के राजा सुरत थे। उनकी पाँच सौ रानियाँ थीं। उनकी पटरानी का नाम सती था। वह राजा रानी में आसक्त रहता था। उसने अपने सेवकों से कहा कि दिगम्बर मुनि के आगमन पर ही मुझे सूचित करना अन्यथा नहीं। यह कहकर राजा रानी के पास चला गया। दूसरे दिन दमधर और धर्मरुचि नाम के मुनिराज एक माह के उपवास उपवास के बाद आहार के लिये नगर में पधारे। उस समय राजा अपनी पटरानी के चेहरे पर तिलक कर रहे थे। तभी सैनिक ने आकर राजा को मुनिराज के आगमन की सूचना दी। तब राजा ने सती रानी से कहा - इस तिलक के सूखने के पहले ही मैं मुनिराज को आहार कराके वापस आ जाऊँगा। तुम गुस्सा नहीं करना। ऐसा कहकर राजा चला गया। रानी सती मुनिराज के आगमन पर बहुत दुःखी हुई और मुनिराज को भला-बुरा कहने लगी। राजा को मुनिराज को आहार देकर जल्दी वापस आ गया तो देखा कि रानी को कोढ़ रोग हो गया है । उसके कोढ़ रोग को देखकर राजा को वैराग्य हो गया और वन में जाकर मुनि दीक्षा ले ली और रानी को दुर्गति को प्राप्ति हुई।

चहकती चेतना की दस वर्ष की अनवरत यात्रा पूर्ण होने पर शुभकामनायें

www.mumukshu.org

mumukshu

SPIRITUAL PATH OF LIBERTY

यह वेबसाइट एक ऐसा विकल्प जो आपकी भागदौड़ भरी जिन्दगी में आपकी अनेक समस्याओं का समाधान करने में सहायक है। यह वेबसाइट पूर्ण रूप से पूज्य गुरुदेवश्री द्वारा उद्घाटित तत्त्व प्रेमियों के लिये समर्पित है।

1. देश–विदेश में निवासरत मुमुक्षु परिवारों की जानकारी (Mumukshu Online Directory)
2. विवाह योग्य वर–वधू के चयन की सुविधा। (Mumukshu Metromonial)
3. अपने व्यापार को मुमुक्षु साधर्मियों से साझा करने का विकल्प। (Mumukshu Store)
4. प्रमुख विद्वानों के पुराने–नये प्रवचनों का संकलन।
5. जैन ग्रन्थों की उपलब्धता। (Online library)
6. भजन प्रेमियों के लिये सभी प्रकार के भजनों का संकलन।
7. देश–विदेश में होने वाले मुमुक्षु समाज के सभी कार्यक्रमों की ईमेल व SMS द्वारा जानकारी। और भी बहुत कुछ।

विशेष

यह कोई संस्था नहीं वरन् बाल ब्र. श्री सुमतप्रकाशजी जैन खनियांधाना के निर्देशन में सुचारु रूप से संचालित होने वाला एक मंच है जो समस्त मुमुक्षु समाज की आवश्यकता को देखते हुये तैयार किया गया है। इसका सदस्य बनना बहुत ही आसान है। आप www.mumukshu.org वेबसाइट खोलिये और होम पेज पर ही Become a Member के नाम से उपलब्ध फार्म को भरिये और सदस्य बन जाइये। www.mumukshu.org

E-mail : info@mumukshu.org, mumukushuo@gmail.com
facebook Page : mumukshu.org
Contact No. 8146861402, 9654657521, 9821014513

आसाम, अपर आसाम, दार्जिलिंग व दक्षिण भारत के क्वालिटी चाय बागानों के होलसेल विक्रेता

Kamlesh Jain 9819408241 | Mukesh Jain 9322224711 | Vinod Jain 7498143873 | Kailash Jain 9322231917

Vitrag MARKETING
Wholesale Tea Marchant

109, Gaya Building, Ground Floor, Room No.2B, Daryasthan Street, Maszid Bandar, Mumbai - 400003 (Maha)

All types of Fancy Bags Manufacturer

Rahul Golchha

GOLCHHA ENTERPRISES

234, Sarafa Bazar, JABALPUR - 482 002 (M.P.) Mob. : 9425153380, 8871053380

होटल की रोटी में घी नहीं,
सुअर की चर्बी लगा रहे हैं

इंदौर पुलिस के छापे में चौंकाने वाला खुलासा

वैसे तो होटल की कोई भी वस्तु खाने योग्य नहीं है परन्तु जो साधर्मी शौक से होटल जाना पसन्द करते हैं उनके लिये यह खराब समाचार हो सकता है। इंदौर में एक होटल पर छापे और विस्तृत जाँच से पता चला है होटलों में जो घी सप्लाई किया जा रहा है उसमें सुअर की चर्बी में एसेन्स मिलाया जा रहा है। प्राप्त जानकारी के अनुसार इंदौर से लगी सीमाओं के आसपास 80 पशुपालन केन्द्र हैं जहाँ लगभग डेढ़ लाख सुअर पाले जाते हैं। यहाँ से सुअर निर्यात भी किये जाते हैं। इन केन्द्रों में सुअरों को मारकर उनकी चर्बी और मांस होटलों में सप्लाई करते हैं। इस चर्बी से ही घी बनाकर होटलों में बेचा जा रहा है। यह कार्य इंदौर, उज्जैन, नागदा, धार, देवास और देश के लगभग सभी बड़े शहरों में हो रहा है। इंदौर सुअर पालक संघ के अध्यक्ष विमल डागर ने स्वीकार किया है कि कई होटलों में सुअर की चर्बी पहुँचाई जाती है। जिसमें एसेन्स मिलाया जाता है। विमल डागर के अनुसार इस प्रकार बनाये गये नकली और असली घी में कोई अन्तर नहीं दिखता।

सुअर एक ऐसा प्राणी है जो एक बार में 12 बच्चों को जन्म देता है। एक उम्र के बाद इनके अंडकोषों को बड़ी बेरहमी से काट दिया जाता है, इसके बाद उसके पेट में लगातार चर्बी बनती जाती है और कुछ दिन बाद सुअर तड़प-तड़पकर मर जाता है या उसे मार दिया जाता है। एक सुअर से 20 किलो तक चर्बी निकलती है। इसके अंग भी बेच दिये जाते हैं। एक सुअर मरने के बाद 50,000 रु. तक दे जाता है।

इस तरह के घी में मांस तो है ही इसके भक्षण से अनेक बीमारियाँ भी होतीं हैं। डॉक्टर सी. के. रत्नावत के अनुसार इस प्रकार का घी लगातार खाने से अल्सर, अपेंडिक्स, आंतों का सड़ना, पाचन क्रिया का बिगड़ना, पैरालेटिक अटैक आदि अनेक नुकसान होते हैं।

आप विचार करें कि जीभ का स्वाद महत्वपूर्ण है या जीवन ......

ऐसे जाँच करें

घी असली है कि नकली

मार्केट में घी बेचने वाली सभी कम्पनियाँ अपने घी के पूर्ण शुद्ध होने का दावा करती हैं। लेकिन ऐसा होता नहीं है इनमें कई तरह की मिलावट की जाती है। घी की शुद्धता जानने के उपाय -

एक चम्मच घी में 5ml हाइड्रोक्लोरिक एसिड (HCL) डालें। अगर घी लाल हो जाता है तो समझें घी में कोलतार डाई मिलाई गई है।

एक चम्मच घी में चार-पाँच बूंद आयोडीन डालें। अगर घी का रंग नीला हो जाये तो समझें घी में आलू की मिलावट की है।

एक कटोरी में एक चम्मच घी डालें। उसमें हाइड्रोक्लोरिक एसिड HCL और एक चुटकी चीनी मिलायें। अगर घी का रंग चटक लाल हो जाता है तो समझ जायें घी में डालडा मिलाया गया है।

थोड़ा सा घी लेकर हाथ में रब करें। इसे सूंघकर देखें। अगर कुछ ही देर में खुश्बू आना बन्द हो जाये तो समझ जायें घी मिलावटी है।

चौबीस तीर्थकरों का चिन्ह गीत

आदिनाथ का वृषभ चिन्ह है, अजितनाथ का हाथी है ।
संभवनाथ का घोड़ा चिन्ह है, अभिनन्दनजी का बन्दर है।।
सुमतिनाथ का चकवा चिन्ह है, श्वेतकमल पद्मप्रभ का ।
स्वस्तिक चिन्ह है श्री सुपार्श्व का, चन्द्र चिन्ह है चन्द्रप्रभ का ।।
पुष्पदन्त का मगर चिन्ह है, कल्पवृक्ष शीतल प्रभु का ।
गेंडा चिन्ह है श्री श्रेयांस का, भैंसा चिन्ह वासुप्रभु का ।।
विमलनाथ का शूकर चिन्ह है, अनन्तनाथ का सेही है ।
वज्रदण्ड है धर्मनाथ का, चिन्ह हिरण शांति प्रभु का ।।
कुन्थुनाथ का बकरा चिन्ह है, मच्छ चिन्ह है अरनाथ का ।
कलश चिन्ह है मल्लिनाथ का, मुनिसुव्रत का कछुआ है ।।
लाल कमल श्री नमिनाथ का, शंख चिन्ह प्रभु नेमि का ।
पार्श्वनाथ का चिन्ह सर्प है, शेर चिन्ह है वीर प्रभु का।।
चौबीस तीर्थंकर को जानो, चिन्हों से ही पहचानो ।
भक्ति भाव से वन्दन करना, नमूँ त्रिकाल भगवन्तों को ।।

रचनाकार - विराग शास्त्री

दांत क्यों गिरे ?

चीनी दार्शनिक कनफ्यूशियस ने अपने शिष्यों से पूछा - मेरे मुंह को देख रहे हो। इसमें पहले दांत और जीभ दोनों थे। क्या अब भी दांत दिखाई दे रहे हैं ?

शिष्य बोले - नहीं... दांत तो नहीं दिख रहे।

और जीभ .....?

हाँ ! जीभ तो दिखाई दे रही है

कन्पयूशियस ने पूछा - जन्म के साथ जीभ भी थी और मरते समय तक साथ रहेगी और दांत जन्म के बाद आये और मृत्यु के पहले गिर गये ऐसा क्यों ?

इस प्रश्न का कोई शिष्य जबाब नहीं दे पाये तब उन्होंने कहा कि दांत कठोर थे इसलिये सब पहले गिर गये या उखाड़ दिये गये और जीभ कोमल थी इसलिये बची रही। इनसे ये शिक्षा मिलेगी यदि जीवन में कोमल परिणाम धारण करोगे तो सबके प्रिय रहोगे। यदि कठोर बनकर रहोगे तो उखाड़ दिये जाओगे।

एक अनोखा पत्र

बसन्तकुमार बिड़ला

भारत के प्रसिद्ध उद्योगपति श्री घनश्यामदासजी बिड़ला ने अपने पुत्र बसन्तकुमार बिड़ला के नाम 1934 में लिखा। यह पत्र अवश्य पढ़ें -

चिरंजीव बसन्त,

यह जो लिखता हूँ उसे बड़े होकर और बूढ़े होकर भी पढ़ना, अपने अनुभव की बात कहता हूँ।

संसार में मनुष्य जन्म दुर्लभ है और मनुष्य जन्म पाकर जिसने शरीर का दुरुपयोग किया, वह पशु है। तुम्हारे पास धन है,तन्दुरुस्ती है, अच्छे साधन हैं, उनको सेवा के लिये उपयोग किया तब तो साधन सफल हैं अन्यथा वे शैतान के औजार हैं। तुम इन बातों का ध्यान रखना।

धन का शौक-मौज में कभी उपयोग कभी नहीं करना, ऐसा नहीं कि धन सदा रहेगा ही इसलिये जितने दिन धन पास में है उसका उपयोग सेवा के लिये करो, अपने ऊपर कम से कम खर्च करो, बाकी जनकल्याण और दुखियों का दुख दूर करने में व्यय करो। धन शक्ति है, इस शक्ति के नशे में किसी के साथ अन्याय हो जाना संभव है, इसका ध्यान रखो कि अपने धन के उपयोग से किसी के साथ अन्याय न हो।

अपनी संतान के लिये यही उपदेश छोड़कर जाओ। यदि बच्चे मौज-शौक, ऐश आराम वाले होंगे तो पाप करेंगे और हमारे व्यापार को चौपट करेंगे। ऐसे नालायकों को धन कभी नहीं देना उनके हाथ में जाये उससे पहले किसी जनकल्याण के काम में तुम लगा देना। तुम उसे अपने मन के अंधेपन से संतान के मोह में स्वार्थ के लिये उपयोग नहीं कर सकते।

हम भाईयों...........है। इन्द्रियों को काबू में रखना, वरना ये तुम्हें डुबा देंगी। नित्य नियम से व्यायाम-योग करना। स्वास्थ्य ही सबसे बड़ी सम्पदा है। स्वास्थ्य से कार्य में कुशलता आती है, कुशलता से कार्य सिद्धि और कार्यसिद्धि से समृद्धि आती है। सुख समृद्धि के लिये स्वास्थ्य पहली शर्त है। मैंने देखा है कि स्वास्थ्य से रहित होने पर करोड़ों-अरबों के स्वामी भी कैसे दीन-हीन बनकर रह जाते हैं। स्वास्थ्य के अभाव में सुख साधनों का कोई मूल्य नहीं। भोजन को दवा समझकर खाना, स्वाद के वश होकर खाते ही मत रहना। जीने के लिये खाना है, न कि खाने के लिये जीना।

- घनश्यामदास बिड़ला

भोजन की भयानक बरबादी और भूखे मरते लोग - एक ज्वलंत समस्या

घर के चारों तरफ पानी....छत पर बैठा परिवार.... भोजन का कोई ठिकाना नहीं और आंखें आसमान की ओर देखकर प्रतीक्षा करती हुईं कि कोई हेलीकॉप्टर उड़ता हुआ आयेगा और भोजन के पैकेट गिरायेगा... अथवा बेहताशा भागते लोग और पूरे नगर में बम और गोलियों की आवाज, एक केम्प में एकत्रित लोग, किसी की माँ बिछड़ गई तो किसी का भाई गायब हो गया। सबकी आंखों में आंसू और भूखे पेट भोजन का इंतजार करते हजारों लोग.....। ये वो परिस्थितियाँ हैं जिनका सामना विश्व में कई जगह हो रहा है।

एक ओर विश्व में लाखों लोग भूख से मर रहे हैं, सीरिया, कम्बोडिया जैसे देशों में एक-एक रोटी के संघर्ष हो रहा है वहीं दूसरी ओर विलासिता और प्रदर्शन की होड़ में विश्व में भोजन की बरबादी की जा रही है। विकसित होते विश्व और विकास के बड़े दावों के बीच हजारों लोग भूख से मर रहे हैं।

दुनियाभर में भारी मात्रा में भोजन बरबाद हो रहा है। औद्योगिक देशों में हर वर्ष लगभग 250 टन भोजन बरबाद हो रहा है यह कुछ अफ्रीकी देशों के पूरे साल के फूड उत्पादन के बराबर है। हर साल जितना भोजन बरबाद हो रहा है वह पूरी दुनिया में होने वाले कुल अनाज उत्पादन से आधे के बराबर है। दुबई जैसे अमीर देश हर दिन 1000 टन भोजन बरबाद करते हैं। यह सब हमारी लापरवाही के कारण हो रहा है। एक अनुमान के अनुसार जब आप एक सेव झूठा करके फेंक देते हैं तो यह लगभग 5 लीटर पानी बरबाद करने के बराबर होता है। कल्पना कीजिये अनाज का हर दाना, फल, सब्जियाँ आदि में कितनी मिट्टी, पानी, जमीन आदि साधन लगते हैं। हर वर्ष 28 मई को भूख से मर रहे लोगों के प्रति संवेदना जगाने के लिये **हंगर डे** मनाया जाता है।

क्या करें - 1. अभिभावक स्वयं झूठा भोजन छोड़ने से बचें और अपने बच्चों को भी झूठा न छोड़ने के प्रति सावधान करें।

2. जितना आवश्यक हो उतना भी भोजन लें और उतना ही भोजन बनायें।

3. यदि भोजन बच जाये तो से किसी भूखे को देकर उसकी भूख शांत करें।

4. झूठे भोजन से होने वाली भयंकर हिंसा और हिंसा से होने वाले पाप से सावधान रहें।

5 सामाजिक आयोजनों शिविर, विधान आदि और पारिवारिक विवाह आदि समारोहों में मात्र प्रदर्शन के लिये भोजन के आइटम न बढ़ायें, मर्यादित बनायें।

आप मानव हैं या दानव ? - स्वयं निर्णय करें

क्या पटाखे फोडकर आप अहिंसा व दया धर्म का पालन कर पायेंगे ?

अत: जियो और जीने दो का अमर संदेश देने वाले भगवान महावीर के निर्वाण दिवस पर हिंसा का तांडव मत करिये। राम, बुध्द, नानक एवं संतों - महापुरूषों के अहिंसा संदेश का पालन कीजिए । सुख शांति के पर्व दीपावली पर अन्य जीवों के लिये यमराज न बनें ।

यह हिंसा के यमराज का नहीं, अहिंसा के सम्राट के निर्वाण का महापर्व है ।

- : प्रकाशक :-

पाठकों की कलम से....

चहकती चेतना की दस वर्षों की अनवतरत यात्रा पूरी होने पर ढ़ेर सारी बधाईयाँ। चहकती चेतना समाज और राष्ट्र का दर्पण और दीपक है। यह पत्रिका मात्र बच्चों के लिये न होकर सभी आयु वर्ग के लिये है। पाप परिणाम और उनके फल दिखाकर धर्म में प्रवृत्ति कराने के सहायक है।

यह सब विरागजी शास्त्री के कड़े परिश्रम, विद्वता और देश-विदेश में भ्रमण करने और उनकी खोजी वृत्ति का परिणाम है।

- बाबूलाल जैन, बुरहानपुर म.प्र.

च से चमको, ह से हंसना, क काम धर्म करना, ती से तीर्थ वंदना, चे से चेतो, त से तम को हरना, ना से नाम बढ़ाना यही काम हमेशा करना, चहकती चेतना सदा ही पढ़ना ।। बहुत-बहुत बधाई।

- श्रीमति शकुन नरेश सिंघई, नागपुर

विरागजी की सोच और समर्पण अनुचरणीय है। आपका निरन्तर कार्यशील रहना समाज को अनेक रूप से लाभकारी रहा है। आप ऐसे ही कार्य में तत्पर रहें और समाज को गति देते रहे इसी मंगल कामना से -

- विकास शास्त्री समस्त जीवन शिल्प परिवार, बानपुर

विरागजी के द्वारा आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन, जबलपुर के माध्यम से किया जा रहा कार्य अनुपम, अलौकिक और अद्वितीय है।

- सुदीप शास्त्री, बरगी जि. जबलपुर

कोई भी काम निरन्तर चलाते रहने के लिये प्रतिबद्धता और श्रम निष्ठा बहुत जरूरी है। चहकती चेतना 10 साल से निरन्तर प्रकाशित हो रही है इसको सतत चलाये रखने के लिये जो प्रयास विराग ने किये हैं इसका मैं प्रत्यक्षदर्शी हूँ। विराग की लगन सराहनीय है। इस खुशी के मौके पर चहकती चेतना की पूरी टीम का हार्दिक अभिनन्दन। यह पत्रिका अनेक कीर्तिमान स्थापित करे - ऐसी शुभकामना -

- पीयूष शास्त्री, प्रबंधक पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर राज. (स्नेही मित्र)

छोटे-छोटे बच्चों में जिनधर्म के संस्कार डालने की जो विशेषता विरागजी में दिखाई देती है वो वास्तव अद्वितीय है। चहकती चेतना के दस वर्ष पूरे होने पर बधाई।

- विपिन शास्त्री, मलाड मुम्बई

विराग ने सच में ही शानदार काम किया है। विराग द्वारा जो भी तत्वप्रभावना में कार्य किये जा रहे हैं सभी कार्यों में हार्दिक अनुमोदन।

-राजकुमार शास्त्री, उदयपुर राज.

चेतना की चहक से बालक चहकने लगते हैं। यह मात्र पत्रिका न होकर बालवर्ग की मित्र है। गम्भीर बातों को रोचकता एवं प्रामाणिकता के साथ प्रस्तुत करना - यह इसकी अद्वितीय विशेषता है। पत्रिका निरन्तर वृद्धिंगत हो - यही भावना।

- शुभम् शास्त्री, प्राचार्य, समन्तभद्र शिक्षण संस्थान, द्रोणगिर म.प्र.

आपकी मेहनत और लगन से अनवरत् प्रकाशित समाज की बहुत सुंदर और रोचक पत्रिका के लिये आपको एवं आपकी पूरी टीम को बधाई अभिनंदन

- सोनू शास्त्री कहान शिशु विहार, सोनगढ़

डॉ. महावीरजी शास्त्री उदयपुर, समता जैन, सुबोध शास्त्री शाहगढ़, प्रियंक शास्त्री खुरई, रजत, शास्त्री उदयपुर, तपिश शास्त्री उदयपुर, सौरभ शास्त्री खड़ैरी, आशीष शास्त्री टीकमगढ़, अमित शास्त्री कोलकाता, गौरव शास्त्री इंदौर, आकाश चौधरी, पंकज शास्त्री हिंगोली, डॉ. योगेशजी अलीगंज, धर्मेन्द्र शास्त्री कोटा, सुदीप शास्त्री अमरमऊ, जितेन्द्र शास्त्री पूना, डॉ. महेशजी भोपाल, चिन्मय जैन, राजेश शास्त्री शााहगढ़, आदि अनेक शुभचिंतकों ने पत्रिका की दसवीं वर्षगांठ पर शुभकामनायें प्रेषित की हैं।

मेरी भावना

पिछले अंक से आगे

ईति-भीति व्यापे नहिं जग में, वृष्टि समय पर हुआ करे ।
धर्म-निष्ठ होकर राजा भी, न्याय प्रजा का किया करे ।।
रोग-मरी दुर्भिक्ष न फैले, प्रजा शान्ति से जिया करे।
परम अहिंसा धर्म जगत में, फैल सर्व हित किया करे।।10।।

May distress and Suffering no longer exit; May it rain in time. May the king also be righteously inclined; And impartially administer justice to the subjects; May disease epidemics & famincs & famines cease; May people live in peace; May the exalted Ahimsa Dharma prevail; And the Gospel of mercy - (not injurnig any one is the highest religion) become the source of good to all.

फैले प्रेम परस्पर जग में, मोह दूर ही रहा करे।
अप्रिय कटुक कठोर शब्द नहिं, कोई मुख से कहा करे ।।
बनकर सब 'युगवीर' हृदय से आत्मोन्नति-रत रहा करें ।
वस्तु स्वरूप विचार खुशी से, सब दुःख संकट सहा करें ।।11।।

May there by mutual love in the world; May delusion dwell at a distance; May no one ever utter unpleasant speech; Or words that are harsh of the time; Whole - heartedly work in their country's cause; May all understand the laws of Truth; And joyfully sorrow and suffering endure. Om, peace, Shanti ! Shanti ! Shanti !

अनुवादक - डॉ. महावीर जैन, जयपुर

संकलन - श्री सतीश जैन, जबलपुर

End.

पंचतन्त्र में मुनिराजों की स्तुति

विश्व में बाईबिल के बाद सर्वाधिक बिकने वाला धार्मिक ग्रन्थ 'पन्चतन्त्र' है। यह ग्रन्थ पण्डित विष्णु शर्मा द्वारा लिखा गया। इसकी एक कहानी में मुनिराजों की स्तुति करते हुये कहा है-

जयति ते जिना येषां केवलज्ञानशालिनाम्। आजन्मनः समरोत्पत्तौ मानसेनोषारायितं।।

एक मात्र ज्ञान संपन्न उन जैन साधुओं की विजय होवे, जिन्होंने जन्म से ही कामदेव की उत्पत्ति के विषय में मन को बंजर बना दिया है।

सा विद्या या जिनं स्तौति तच्चित्तम् यज्जिने रतम्। तावेव च करौ शलाघ्यौ यौ तत्पूजा करौ।।

वही वस्तुतः विद्या है जो जिन (जिनसाधु) की स्तुति करती है, वही वस्तुतः मन है, जो 'जिन' में लगा हुआ है तथा वे दोनों ही हाथ प्रशंसनीय हैं जो उन जिनों की पूजा में लगे हैं।

संकलन - संजय सिद्धार्थी, इंदौर

चहकती चेतना के प्रकाशन के दसवें वर्ष में प्रवेश पर बधाई

RAMKOTE LIONS

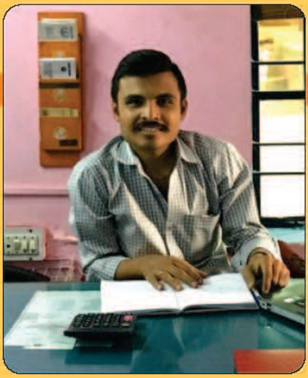

Bag Closing Thread for All type of Gunny Bags

Stitching & Overlocking Threads for Garments

SPONSORED BY

VENUS THREAD WORKS

Venus

4-14-79, Hasan Nagar, Hyderabad, Telangana, India – 500052

Web Site : http://www.venusthreadworks.com

जीवन शिल्प इंटर कॉलेज एवं जीवन शिल्प पब्लिक स्कूल

JEEVAN SHILP INTER COLLEGE BANPUR LALITPUR (U.P.)

EDUCATION DEFINES YOURSELF

बानपुर जि. ललितपुर उ.प्र.
सम्पर्क : 9453661666
E-mail : jeevanshilp13@gmail.com
Website : www.jeevanshilp.in

यह एक ऐसा शिक्षण संस्थान है जहाँ जरूरतमन्द बच्चों को अच्छी शिक्षा और संस्कार दिये जाते हैं। बाल. ब्र. रवीन्द्रजी आत्मन् की पावन प्रेरणा से संचालित यह शिक्षण संस्थान बिना किसी सरकारी या समाज के आर्थिक सहयोग से संचालित हो रहा है। यह संस्थान अधिकांशतः किसान परिवार और अशिक्षित क्षेत्र के बच्चों को बिना किसी आर्थिक लाभ के योग्य बनाने के लिये विगत 5 वर्षों से कार्यरत है।

प्रत्येक छात्र/छात्रा को पापों से निवृत्ति, कषायों से दूर रहने और संस्कारित जीवन की प्रेरणा दी जाती है। अनेक नवीन योजनाओं और सार्थक प्रयोगों से यहाँ पढ़ने वाले 1000 छात्र-छात्राओं के साथ पूरा गांव एवं क्षेत्र प्रभावित हुआ है। आइये इस संस्थान में आपका हार्दिक स्वागत है।

जीवन शिल्प सोच, शिक्षा से हो ग्राम विकास,
ग्राम विकास से देश विकास
संस्कारित जीवन ही वास्तविक जीवन है।

परिणामों का फल

किसी समय मुनि दत्त योगीराज महल के पास एकांत स्थान में ध्यान में लीन थे। महल की एक नागश्री नाम की नौकरानी ने उन्हें वहाँ से हटाना चाहा पर मुनिराज वहीं अडिग रहे। मुनिराज जब वहाँ से नहीं हटे तो नौकरानी को गुस्सा आ गया और उसने कचरा लाकर मुनिराज पर डाल दिया। प्रातः जब राजा को नौकरानी द्वारा मुनिराज के ऊपर उपसर्ग की जानकारी हुई तो उन्होंने तुरन्त मुनिराज को वहाँ से निकालकर उनकी सेवा की और क्षमा मांगी। नागश्री को भी अपनी भूल का अहसास हुआ और उसने भी क्षमा मांगकर प्रायश्चित लिया और मुनिराज के लिये औषधि बनाकर मुनिराज की सेवा में सहयोग दिया। वह मरकर एक नगर में वृषभसेना के रूप में उत्पन्न हुई। पूर्व भव में मुनिराज की सेवा के भाव के कारण उसे एक विशेष सर्वोषधि ऋद्धि प्राप्त हो गई । उसके स्नान के जल से लोगों के सभी प्रकार के रोग आदि नष्ट हो जाते थे। आगे चलकर वह अगली पर्याय में राजा उग्रसेन की पटरानी हुई। परन्तु एक बार राजा उग्रसेन को रानी के शील पर शंका हो गई और उसने अपनी रानी को समुद्र में फिकवा दिया परन्तु रानी शीलवती थी, उसके शील के प्रभाव से देवों ने समुद्र में सिंहासन पर बिठाकर उसकी रक्षा की।

नागश्री ने मुनिराज पर जो उपसर्ग किया उसके फल में उसे रानी की अवस्था में अपमान सहना पड़ा और जब बाद में उसने मुनि की सेवा की सर्वोषधि ऋद्धि हुई जिसके प्रभाव से उसके स्नान के जल से लोगों के भयंकर रोग भी दूर हो जाते थे।

देखा परिणामों के फल को । इसलिये हमेशा हर काम सोच - विचार करना चाहिये ।

करम का खेल मिटे न रे भाई

बंग्लादेश के खुलना नगर के रहने वाले 25 साल के अबुल बजंदर बीमारी के वजह से हाथ पैर पेड़ की शाखाओं की तरह बढते जा रहे हैं।ये रेयर मेडिकल डिसआर्डर एपिडमॉडाइस्प्लासिया नाम के कारण हो रहा है। है ना कर्म के उदय की विचित्रता..।

गाय को चाहिये न्याय

चित्र में बस के सामने खड़ी आप एक गाय को देख रहे हैं। यह फोटो कर्नाटक के एक जिले का है। लगभग 4 साल पहले इस बस से टकराकर इसके बछड़े की मृत्यु हो गई थी तबसे लगातार यह गाय इस बस का रास्ता रोकने का प्रयास करती है। बस के मालिक ने तंग आकर बस का रंग बदलवा लिया फिर भी गाय ने बस का रास्ता रोकना नहीं छोड़ा। ऐसा लगता है मानो यह गाय न्याय की मांग कर रही हो। है ना आश्चर्य किन्तु है सत्य।

मुम्बई में सम्पन्न हुआ इंटरनेशनल यूथ कन्वेशन

युवा पीढ़ी को जिनधर्म से जोड़ने हेतु नवीन प्रयोग किये जा रहे हैं। इसी क्रम में मुम्बई के माटुंगा में दिनांक 24 जुलाई को द्वितीय इंटरनेशनल यूथ कन्वेशन का आयोजन किया गया। इस अवसर पर विशेष रूप से पधारे डॉ. संजीवजी गोधा जयपुर का कौन करता और कौन भोगता विषय पर विशेष व्याख्यान का लाभ प्राप्त हुआ। साथ पण्डित श्री ज्ञायक शास्त्री ने मेरा ठिकाना क्या एवं विदुषी श्रीमति ज्ञप्ति जैन ने यदि चूक गये तो जैसे अध्यात्मिक विषयों को रोचक शैली में प्रस्तुत किया। रात्रि में पंडित प्रफुल्ल शास्त्री एवं प्रशांत शास्त्री के द्वारा जिनेन्द्र भक्ति का आयोजन के संयोजक पण्डित श्री देवांग गाला थे, साथ ही विशेष सहयोगी श्री रमेश बुरीचा एवं मणीलाल करिया ने आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम में लगभग 500 युवाओं की उपस्थिति रही। कार्यक्रम की तीसरा आयोजन देवलाली नासिक में दिनांक 30 दिसम्बर 2016 से 1 जनवरी 2017 तक किया जायेगा।

- अभिषेक जोगी, गजपंथा

रंगदार, खूश्बुदार, जायकेदार

माँ-बेटी चाय

कश्मीर से कन्याकुमारी तक सब ने चाहा सब ने सराहा

मेजिक चाय माँ-बेटी गोल्ड चाय MAABETEE Premium Tea RAJA Tea

GYAYAK MARKETING PVT.LTD.
40,Industrial Area,Dahod Road,
Banswara 327001 (Raj.)

(02962) 257600
Email : maabeteetea2002@yahoo.com
www.maabeteetea.com

With Best Wishes

www.zamikinfotech.in

1. Website Designing

A. Static Website
B. Responsive
C. CMS Website
(Content Managment System)
Were You Can Change/Upload/Delete By Yoaur Own
D. Ecomerce - Like Snapdeal, Flipcart, Yupme

2. Software Developing

A 0. EPP System
B. Billing Software
C. Account Software
D. CRM Software
E. Inventory/Stock Maintain With Photo Option

3. Mobile App Developer

A. Android Version
B. I Phone Vertsion
C. Windows Licence
D. NBlack Berry Licence

Email: zamikinfotech@yahoo.com Website : www.zamikinfotech.in
Contact No.- Darshan R. Mehta & Shivani D. Mehta +91-9769284209

सर्वोदय फाउन्डेशन का बाल वर्ग को एक और उपहार

खेलों के रंग जिनधर्म के संग

गेम बॉक्स का विमोचन

विगत लगभग 15 वर्षों से बाल वर्ग को जिनधर्म के संस्कार देने के उद्देश्य से आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन जबलपुर द्वारा अनेक जिनधर्म प्रेरक सामग्री का निर्माण किया गया है। इस क्रम में अनेक प्रकार की वीडियो सीडी, बाल साहित्य के बाद अगली प्रस्तुति के रूप में गेम्स बॉक्स **खेलों के रंग - जिनधर्म के संग** तैयार किया गया है। इस गेम बॉक्स में पाँच गेम जैनी बच्चे, हमें वीर बनना है, चार गति के पार, संसार का मकड़जाल, हम होंगे ज्ञानवान हैं। प्रत्येक बॉक्स में गेम खेलने के लिये गोटी, नियमावली दी गई है।

इस गेम बॉक्स का लोकार्पण जयपुर में आयोजित आध्यात्मिक शिक्षण शिविर के दौरान श्री नरेशजी लुहाड़िया दिल्ली द्वारा किया गया। करेली में शिविर के दौरान पण्डित वीरेन्द्रजी आगरा द्वारा एवं जबलपुर में वीतराग विज्ञान पाठशाला के वार्षिकोत्सव के अवसर पर श्रीमति हंसा विजय पामेचा के कर कमलों से लोकार्पण किया गया।

इस के निर्माण में कोलकाता निवासी श्री सुरेन्द्रजी पाटोदी, श्री दिलीपजी सेठी, श्री अर्णव-नैतिक टिम्बड़िया हस्ते श्री भरतभाई टिम्बड़िया, श्री जयन्तीलालजी मूथा, डॉ. अरविन्द दोसी गोन्डल गुज़., श्री वीरेशजी जैन सूरत, श्री प्रदीपजी गंगवाल औरंगाबाद का विशेष अर्थ सहयोग प्राप्त हुआ है। इस गेम का निर्माण एवं परिकल्पना श्री विराग शास्त्री एवं श्रीमति समता अमित जैन कानपुर द्वारा की गई है। गेम के निर्माण में श्रीमति स्वस्ति विराग जैन एवं श्रीमति अल्का राजीव जैन जबलपुर का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ है।

मंगल संदेश स्टीकर्स उपलब्ध

हमें प्रतिदिन हर समय अपने आत्मकल्याण की भावना होती रहे इसे भावना से निरन्तर प्रेरणा देने के उद्देश्य से सर्वोदय फाउन्डेशन, जबलपुर तैयार किये गये हैं। एक सेट में 15 स्टीकर्स का सेट मात्र 20 रु. में उपलब्ध हैं।

जिनवाणी संरक्षण केन्द्र कुछ माह के लिये बन्द

जीर्ण-शीर्ण जिनवाणी और पुरानी पत्र-पत्रिकाओं का संग्रहण करने हेतु जबलपुर में स्थापित जिनवाणी संरक्षण केन्द्र बारिश के मौसम के कारण बन्द कर दिया गया है। बारिश के मौसम में आपके द्वारा भेजी गई जिनवाणी गीली होने का भय रहता है साथ ही जिनवाणी में जीव राशि उत्पन्न होती है। इसलिये इस अविनय से बचने हेतु यह केन्द्र दिसम्बर तक के लिये बन्द कर दिया गया है। जिन्हें जीर्ण-शीर्ण जिनवाणी अथवा पुरानी पत्र-पत्रिकायें भेजना हो वे अभी एकत्रित करके रखें और जनवरी माह में भेजें। उसके पूर्व हम इसे स्वीकार करने में असमर्थ हैं।

संचालक - जिनवाणी संरक्षण केन्द्र, जबलपुर

गुरुवाणी मंथन शिविर एवं मुमुक्षु अर्न्तविद्यालय विद्यार्थी शिविर सानंद सम्पन्न

श्री कुन्दकुन्द-कहान दिगम्बर जैन तीर्थ सुरक्षा ट्रस्ट एवं श्री कुन्दकुन्द-कहान पारमार्थिक ट्रस्ट मुम्बई के संयुक्त तत्वावधान में पूज्य गुरुदेवश्री कानजी स्वामी की साधना भूमि सोनगढ़ में आयोजित गुरुवाणी मन्थन शिविर एवं मुमुक्षु अर्न्तविद्यालय विद्यार्थी शिविर सानन्द संपन्न हुआ। दिनांक 23 जुलाई से 28 जुलाई 2016 तक आयोजित इस कार्यक्रम में देशभर से 66 विद्वानों ने सहभागिता की। कार्यक्रम का उद्घाटन जामनगर की श्रेष्ठी श्री विपिनभाई वाधर के द्वारा ध्वजारोहण से हुआ। प्रतिदिन के कार्यक्रमों में प्रातः 7.00 बजे से गरु संस्मरण कक्षा, जिनेन्द्र पूजन, गुरुदेवश्री का सीडी प्रवचन, सीडी प्रवचन पर पण्डित श्री वीरेन्द्रजी आगरा, पण्डित श्री अभयकुमारजी देवलाली द्वारा विशेष चर्चा, दोपहर में आध्यात्मिक पाठ के पश्चात् पुनः गुरुदेवश्री का सीडी प्रवचन, इसके पश्चात् पण्डित श्री देवेन्द्रकुमारजी अलीगढ़, पण्डित श्री रजनीभाई दोसी हिम्मतनगर द्वारा सीडी प्रवचन पर चर्चा और रात्रि में विभिन्न विद्वानों के द्वारा तत्व चर्चा का लाभ प्राप्त हुआ।

इस विद्वत् गोष्ठी के साथ ही मुमुक्षु समाज की संस्थाओं द्वारा संचालित 7 विद्यालयों के 180 विद्यार्थियों और उनके 15 अध्यापकों ने सहभागिता की। इन विद्यार्थियों की विशेष विषयों पर 6 कक्षायें संचालित की गईं। इन कक्षाओं का संचालन पण्डित श्री अजित शास्त्री अलवर, पण्डित श्री सुनील शास्त्री राजकोट, पण्डित श्री नीलेश शाह मुम्बई, पण्डित श्री आकेशजी उभेगांव, पण्डित श्री सोनू शास्त्री सोनगढ़, पण्डित श्री सजल शास्त्री सिंगोड़ी, पण्डित श्री सुमित शास्त्री चैतन्यधाम द्वारा किया गया। रात्रि में सभी विद्यालयों द्वारा प्रतिदिन ज्ञानवर्द्धक कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये। शिविर के अंत में सभी विद्यार्थियों की परीक्षा आयोजित हुई। इसमें आठवीं कक्षा में चैतन्य विद्या निकेतन अहमदाबाद के आतम जैन ने प्रथम, श्री नन्दीश्वर विद्यापीठ, खनियांधाना के अक्षत जैन, आचार्य कुन्दकुन्द विद्या निकेतन, सोनागिर के सुयश जैन, श्री सन्मति संस्कार संस्थान के अपूर्व जैन ने द्वितीय और श्री महावीर विद्या निकेतन के सार्थक जैन ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। कक्षा नवमी में नागपुर के अक्षत जैन ने प्रथम, श्री समन्तभद्र शिक्षण संस्थान, द्रोणगिर के सुलभ जैन ने द्वितीय और द्रोणगिर के आदर्श जैन ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। कक्षा दसवीं के नागपुर के संस्कार जैन ने प्रथम, कोटा के अक्षत जैन ने द्वितीय, चैतन्यधाम के सुस्मित जैन ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

इन सभी विद्यार्थियों और विद्यालय प्रतिनिधियों को जयपुर शिविर में श्री कुन्दकुन्द-कहान दिगम्बर जैन तीर्थ सुरक्षा ट्रस्ट के अधिवेशन में अनेक गणमान्य साधर्मियों की उपस्थिति में सन्मानित किया गया।

इस कार्यक्रम में श्री हंसमुख भाई वोरा, श्री बसन्तभाई दोसी, श्री पवन जैन मंगलायतन,श्री राजूभाई कामदार, श्री अजितभाई बड़ौदा, श्री आलोक जैन कानपुर, मुम्बई से श्री वीनूभाई शाह, श्री अक्षय भाई दोसी, श्री हितेन ए. सेठ आदि अनेक गणमान्यजन उपस्थित थे।

सम्पूर्ण कार्यक्रम श्री अनन्तराय ए. सेठ की गरिमामयी उपस्थिति एवं मार्गदर्शन में श्री महीपाल शाह बांसवाड़ा के कुशल निर्देशन एवं श्री विराग शास्त्री के संयोजन में संपन्न हुये। इस कार्यक्रम में कहान शिशु विहार के निर्देशक श्री सोनू शास्त्री, श्री आतमप्रकाश शास्त्री, श्री अनेकान्त शास्त्री, श्रीमति शिखा जैन, श्री राहुल शास्त्री बण्डा, श्री उर्विश शास्त्री पिड़ावा का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ।

- संपादक

क्रोध का उत्तर क्षमा से

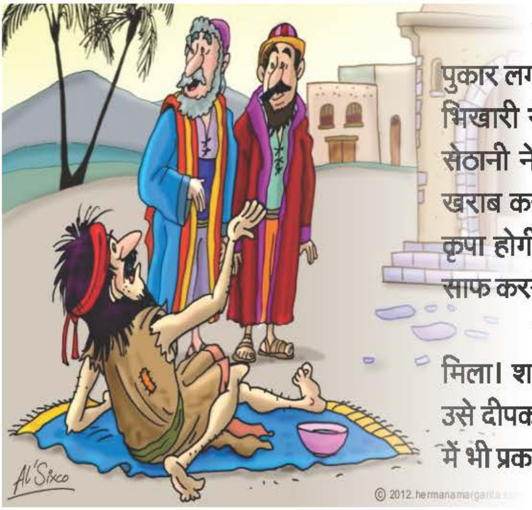

तीन दिन का भूखा भिखारी सेठ की हवेली के द्वार पर गया। उसने भिक्षा के लिये पुकार लगाई। सेठानी ने भिखारी को देखा और कहा - आगे जाओ यहाँ कुछ नहीं मिलेगा। भिखारी ने दीन स्वर में कहा - माताजी! तीन दिन से भूखा हूँ, कुछ तो दे दो दीजिये। सेठानी ने दुत्कारते हुये भिखारी से कहा - यहाँ से जाते हो कि नहीं, सुबह-सुबह दिन खराब करने के लिये आ गया। भिखारी ने फिर कहा - माताजी! एक रोटी ही दे दो, बड़ी कृपा होगी। सेठानी का गुस्सा बढ़ गया उसने रोटी देने की जगह पास में पड़ा हुआ फर्श साफ करने का पोंछा उठाया और उस भिखारी को दे दिया।

भिखारी ने उसे सहज भाव से लिया और धन्यवाद देते हुये बोला - चलो.. कुछ तो मिला। शाम को वह अपने घर गया, उसने उस कपड़े को काटकर उसकी बाती बनाई और उसे दीपक में रखकर जला दिया और प्रार्थना की- इस दीपक की तरह उस सेठानी के हृदय में भी प्रकाश हो।

पहला कर्तव्य

गांधीजी जब बच्चे थे, स्कूल में पढ़ने के लिये जाते थे। उनकी कक्षा अनेक अध्यापक ने कक्षा के बच्चों से एक प्रश्न किया कि तुम अपने माता-पिता के पास जंगली रास्ते से कहीं जा रहे हो और अचानक तुम्हारे सामने शेर आ जाये तो तुम क्या करोगे ?

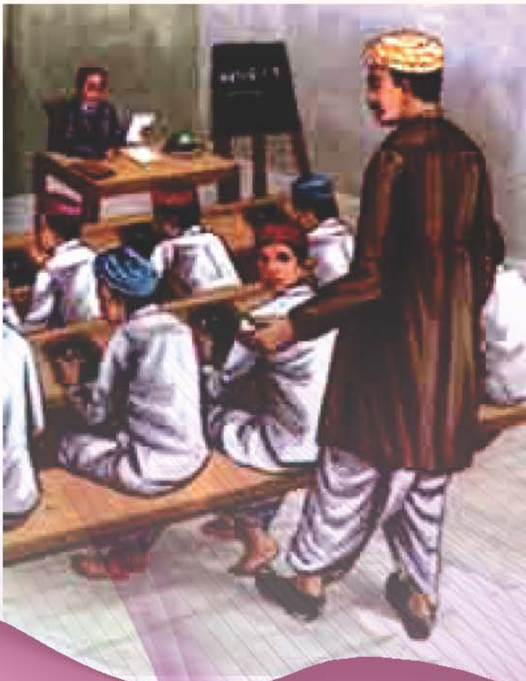

एक बच्चे ने उत्तर दिया - मैं पापा के कन्धों पर बैठ जाऊँगा। दूसरे ने कहा - मम्मी के पीछे छुप जाऊँगा। तीसरे ने कहा - मैं दौड़ लगाकर वहाँ से भाग जाऊँगा। चौथे ने कहा - मैं शेर से कुश्ती लड़ने लगूँगा आदि अनेक प्रकार के उत्तर बच्चों ने दिये। जब गांधीजी का नम्बर आया तो उन्होंने आचार्य से कहा - आचार्यजी ! मैं शेर को देखते ही उसके सामने जाकर खड़ा हो जाऊँगा।

आचार्यजी ने पूछा - बेटा ! तुम ऐसा क्यों करोगे, ऐसा करने से तुम्हें क्या लाभ होगा ? गांधीजी ने कहा - आचार्यजी ! ऐसा करने से शेर मुझे खाकर अपनी भूख मिटा लेगा और मेरे माता-पिता की रक्षा हो जायेगी। माता-पिता का जीवन बचाना क्या पुत्र का कर्तव्य नहीं है ..?

गांधीजी के उत्तर को सुनकर आचार्यजी बहुत प्रसन्न हुये।

7 लाख में खरीदा गया था
ताजमहल और खरीदने वाला जैन

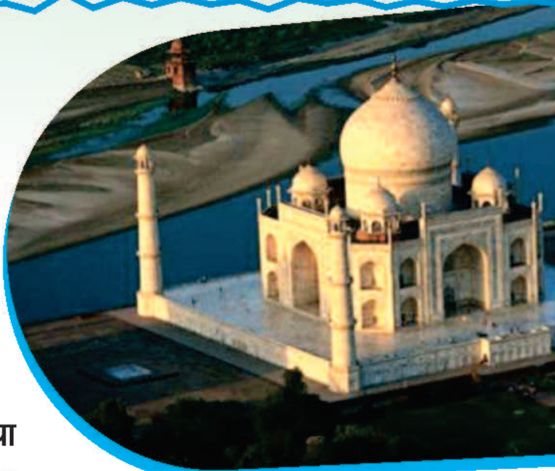

पढ़कर आश्चर्य लग रहा होगा ना परन्तु यह सत्य है। पढ़िये कैसे, क्यों और कब

इतिहास के अनुसार सन् 1803 में अंग्रेजों ने ईस्ट इंडिया कम्पनी नाम के नाम से व्यापार करते हुये आगरा पर अपना अधिकार कर लिया था। उस समय अंग्रेजों से डरकर अनेक सेठ और साहूकारों ने अंग्रेजों के साथ हो गये थे। उसी समय मथुरा के सेठ लक्ष्मीचन्दजी के व्यक्तित्व, आचरण, दानवीरता और व्यवहार कुशल से अंग्रेज अधिकारी बहुत प्रभावित थे और उनका बहुत सन्मान करते थे। स्वयं वायसराय लार्ड कर्जन ने एक बार उनके मेहमान बनकर उनके घर गये थे।

अंग्रेजों ने अपने शासनकाल में आगरा के अनेक ऐतिहासिक स्मारकों को बेचना शुरु कर दिया। जिनमें प्रसिद्ध कवि अबुलफजल फैजी अकबर का खंदारी बाग का स्मारक, विख्यात शायर मिर्जा गालिब की हवेली काला महल, दारा की हवेली शामिल थे। ताजमहल को मुस्लिम कला का कोहिनूर कहा जाता था। अंग्रेज ताजमहल में शराब की पार्टियाँ करते थे। उस समय अंग्रेजों के शासन की राजधानी कोलकाता थी। उस समय के गवर्नर जनरल लॉर्ड बेंटिक ने सोचा कि ताजमहल के खूबसूरत पत्थरों का निकालकर लन्दन में बेचा जाये तो क्वीन विक्टोरिया का खजाना भर जायेगा। उन्होंने ताजमहल 1 लाख 50 हज़ार में सेठ लक्ष्मीचन्दजी को बेच दिया। जब सेठ लक्ष्मीचन्द ताजमहल कब्जा लेने पहुँचे तो हिन्दू और मुसलमानों ने इसका विरोध किया यह देखकर लक्ष्मीचन्दजी ने ताजमहल वापस कर दिया। फिर लार्ड बेंटिक ने गुस्से में कोलकाता से प्रकाशित होने वाले अंग्रेजी अखबार जानबुल में दिनांक 26 जुलाई 1831 को प्रसिद्ध ताजमहल को बेचने की विज्ञप्ति प्रकाशित करवाई ।ताजमहल की नीलामी की बोली दो दिन तक चली पर कोई भी ताजमहल को नहीं खरीद पा रहा था और सेठ लक्ष्मीचन्दजी ने 7 लाख रुपये की बोली लगाकर ताजमहल फिर खरीद लिया। इस तरह सेठ लक्ष्मीचन्दजी ताजमहल के मालिक बन गये। बाद में एक अंग्रेज सिपाही की शिकायत के बाद ब्रिटेन से ताजमहल वापस लेने के आदेश आये ओर सेठजी को ताजमहल वापस करना पड़ा।

सेठ लक्ष्मीचन्दजी ने मथुरा के चौरासी में भगवान जम्बू स्वामी का विशाल जिनमंदिर बनवाया और ग्वालियर से विशाल जिनप्रतिमा लाकर विराजमान करवाई। सेठजी ने जैन समाज के लिये अनेक कार्य किये । वर्तमान में उन्हीं के वंशज सेठ विजयकुमारजी मथुरा के जिनमंदिर में अपनी सेवायें दे रहे हैं।

इस घटना का उल्लेख ब्रिटिश लेखक एचजी केन्स ने अपनी पुस्तक आगरा एण्ड नेबरहुड में किया है।

-' ताजमहल' पुस्तक से साभार लेखक : इतिहासवेत्ता प्रोफेसर रामनाथ

वात्सल्य पर्व का आयोजन - 18 अगस्त को वात्सल्य पर्व रक्षा बन्धन का आयोजन किया गया। कथा के माध्यम से छात्रों को पर्व का महत्व बताया गया।

दशलक्षण महापर्व - शाश्वत पर्व पर्वाधिराज दशलक्षण का कार्यक्रम अत्यंत उत्साह से आयोजित किया गया। इस अवसर पर पूज्य गुरूदेवश्री सीडी प्रवचन, डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल का उत्तम संयम धर्म पर प्रवचन छात्रों को सुनाया गया। प्रतिदिन के पर्व की सामान्य व्याख्या की गई और इस अवसर पर छात्रों ने अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये।

विद्यालय की प्रतिभायें -

- कहान शिशु विहार के कक्षा आठवीं के छात्र ओमकार पोकले और आर्यन जैन का वालीबॉल खेल में विद्यालय की ओर राज्य स्तरीय प्रतियोगिता के लिये चयन किया गया।
- कक्षा नवमीं के छात्र साहिल का शतरंज प्रतियोगिता में राज्य स्तरीय प्रतियोगिता के लिये चयन हुआ।
- समय-समय पर अनेक सांस्कृतिक, साहित्यिक ज्ञानवर्धक कार्यक्रम संपन्न हुये। समस्त कार्यक्रम निदेशक श्री सोनू शास्त्री के निर्देशन में श्री आतमप्रकाश जैन, श्री अनेकान्त जैन एवं श्रीमति शिखा सोनू जैन के विशेष सहयोग से संपन्न किये गये।

समय-समय पर पधारने वाले श्रेष्ठियों एवं विद्वानों ने विद्यालय की समस्त गतिविधियों की जानकारी प्राप्त विद्यालय की टीम की सराहना की और इस पवित्र कार्य की अनुमोदना की।

आगामी कार्यक्रम - आगामी श्रृंखला में विशेष कार्यक्रम के अन्तर्गत दिनांक 12 नवम्बर से 14 नवम्बर तक विद्यालय स्तर पर बाल संस्कार शिविर का आयोजन किया जायेगा। इस अवसर पर विद्यालय के समन्वयक श्री विराग शास्त्री का विशेष लाभ प्राप्त होगा।

गुरुवाणी मंथन शिविर की झलकियां

अपने मित्रों और सम्बन्धियों को चहकती चेतना का सदस्य बनाईये

आप स्वयं तो चहकती चेतना पत्रिका का लाभ ले रहे हैं हमारी भावना है कि आपके परिवार के अन्य सदस्य, संबंधी मित्रगण भी इस पत्रिका का लाभ लें। आप संलग्न फार्म भरकर भेजें और अपने बहिन, भाई, भतीजे, नातिन आदि को चहकती चेतना का सदस्य बनाकर उन्हें यह उपहार दें। आप अपने परिवार अथवा मित्रों के बच्चों को उपहार में कुछ गिफ्ट अवश्य देते हैं। पर आपके द्वारा दिया गया उपहार कुछ ही दिन में खराब या अनुपयोगी हो जाता है परन्तु चहकती चेतना अल्प राशि में वर्षों तक घर पहुँचेगी और ज्ञानवर्धन भी होगा। यह जिनधर्म की प्रभावना है तो देर किस बात की आप यह फार्म भरिये और उन्हें दीजिये मंगल उपहार . . .

सदस्यता फार्म

नाम ....

घर का पूरा पता ....

....

.............................पिन कोड ....मोबाइल नम्बर ....

☐ तीन वर्ष के लिये 400 रु. ☐ 10 वर्ष के लिये 1200/-

आप अपनी सदस्यता राशि हमारे बैंक एकाउन्ट में जमा करके हमें सूचित करें। चैक/ड्राफ्ट के साथ संलग्न फार्म भेजें या फिर फार्म का विवरण हमें What's app या Email करें। **खाता नाम - चहकती चेतना, जबलपुर**
बैंक नाम - पंजाब नेशनल बैंक, फव्वारा चौक, जबलपुर खाता नम्बर - 1937000101030106,
IFSC No. : PUNB01937000 मोबाइल नम्बर - 9300642434

भव की **तृषा** को शांत कर,
कर ज्ञान सुधा रस पान ।
जिनभक्ति उल्लासमय,
पाओ पद निर्वाण ।।

तृषा राहुल किनी, लॉस एंजलिस,
अमेरिका 28-12-2016

ज्ञान कला की पूर्णिमा,
होता केवलज्ञान ।
जन्म मरण का क्षय करो,
तुम प्यारे **तियान** ।।

तियान राहुल किनी, लॉस एंजलिस,
अमेरिका 28-12-2016

कहान शिशु विहार की गतिविधियाँ

सोनगढ़ में संचालित कहान शिशु विहार में छात्रों के सर्वांगीढ़ विकास के लिये निरंतर कार्यक्रम आयोजित होते रहते हैं ।

केलेण्डर का प्रकाशन - कहान शिशु विहार की गतिविधियों की मुख्यता से विद्यालय के एक केलेण्डर का प्रकाशन किया गया है। इसमें जुलाई 2016 से जून 2017 तक की तिथियों और कार्यक्रमों का उल्लेख किया गया है। इस केलेण्डर का विमोचन गुरुवाणी मन्थन शिविर के अवसर पर श्री अक्षयभाई दोसी के कर कमलों से किया गया।

वार्षिकोत्सव संपन्न - 13 जून को विद्यालय का वार्षिकोत्सव का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में वर्ष में श्रेष्ठ अंक प्राप्त करने वाले एवं अन्य गतिविधियों में श्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले छात्रों को पुरस्कृत किया गया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता श्रीमति दीपा हितेन सेठ, मुम्बई ने की।

परिचय सम्मेलन का आयोजन - नये सत्र मे प्रवेश पाने वाले छात्रों को परस्पर स्नेह बढ़ाने एवं विद्यालय की गतिविधियों से परिचित कराने के उद्देश्य से दिनांक 20 जून को परिचय सम्मेलन का आयोजन किया गया।

योग दिवस - बालकों को स्वास्थ्य के प्रति जागरुक करने एवं विश्व स्तर पर मनाये जाने वाले अन्तरर्राष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन दिनांक 21 जून को विद्यालय परिसर में किया गया। जिसमें बालकों को योग कराके स्वास्थ्य के प्रति जिम्मेदार होने की प्रेरणा दी गई।

मेडीकल केम्प का आयोजन - छात्रों के स्वास्थ्य की उत्तमता के लिये 2 जुलाई को मेडीकल केम्प लगाया गया। जिसमें सभी छात्रों की आंखों की, ब्लड ग्रुप, हेपेटाईटिस आदि अनेक जांच की गईं।

पावागढ़ तीर्थ की यात्रा संपन्न - जैन संस्कृति और तीर्थों से परिचय कराने के उद्देश्य से नियमित यात्रा के क्रम में 17 जुलाई को सभी छात्रों को सिद्धक्षेत्र पावागढ़ की यात्रा कराई गई। वन्दना के पश्चात् सभी छात्र बड़ौदरा स्थित फनवर्ल्ड भी गये।

स्वाधीनता दिवस पर विशेष आयोजन - भारत के आजादी की 67वीं वर्षगांठ पर 15 अगस्त को प्रातः ध्वजारोहण किया गया और रात्रि में प्रासंगिक

प्रश्न आपके - उत्तर जिनागम के -

शंका समाधान

1. सूतक-पातक के समय दूसरे के द्वारा दिया गया गंधोदक ले सकते हैं या नहीं ?

उत्तर - सूतक - पातक में दूसरों के द्वारा दिया गया गंधोदक लेने में कोई दोष नहीं है।

2. आजकल प्रतिवर्ष मुनिराजों की पिच्छी बदली जाती है, क्या जिनागम में प्रतिवर्ष पिच्छी बदलने का उल्लेख है ?

उत्तर - आगम में कहीं उल्लेख नहीं है कि प्रतिवर्ष पिच्छी बदली जाये। यह प्रथा आसक्ति के कारण चल पड़ी है और प्रदर्शन की वस्तु बन गई है। आजकल मोर पंख के लिये मोरों की हत्या की जा रही है। सर्वार्द्धसिद्धि ग्रन्थ में आचार्य पूज्यपाद स्वामी ने उपकरणों में आसक्ति को आर्तध्यान कहा है।

3. क्या आगम में महिलाओं को प्रतिमा का अभिषेक का विधान है ?

उत्तर - मूलंसघ के जैनाचार्यों ने कहीं भी इस प्रकार का उल्लेख नहीं किया है, मात्र काष्ठासंघी आगमों में ही इस प्रकार का उल्लेख है और काष्ठासंघ के आचार्यों को जैनाभासी कहा है। हम स्वयं विवेक से विचार करें तो जब मुनिराजों को महिलाओं को सात हाथ से दूर से नमस्कार करने की बात कही है तो वे वीतरागी प्रतिमा को कैसे स्पर्श कर सकती हैं ? तीर्थंकर के जन्मोत्सव पर भी इन्द्रों ने अभिषेक किया था, इन्द्राणियों ने नहीं। भगवती आराधना में आचार्य शिवकोटि ने लिखा कि काष्ठ अर्थात् कागज, धातु, मिट्टी की स्त्री के चित्र आदि का स्पर्श हो जाने पर ब्रह्मचर्य महाव्रत धारी मुनिराज को एक दिन का उपवास करना लिखा है।स्पर्श होने पर शील का दोष लगता है तो फिर स्त्री वीतरागी भगवान को कैसे स्पर्श कर सकती हैं ? आज जो कुछ चल रहा है वह क्यों हो रहा है आप स्वयं विचार कर लें।

4. भट्टारक गण किस प्रकार के व्रती में आते हैं

उत्तर - वे ऐलक क्षुल्लक तो हो ही नहीं सकते क्योंकि ऐलक एक लंगोटी रखते हैं और क्षुल्लक के एक चादर और एक लंगोट के अलावा अन्य परिग्रह का त्याग होता है उनके उद्दिष्ट भोजन का भी त्याग होता है जबकि भट्टारक आजकल बहुत संपत्ति के स्वामी हैं। परिग्रह परिमाण न होने से वे दूसरी प्रतिमा के धारी भी नहीं हैं। पिच्छी लेने से कोई व्रती नहीं बन जाता। अतः उन्हें किस श्रेणी में रखा जाये इसका कुछ विधान नहीं है।

सिगरेट पीने के तीन लाभ

एक स्कूल में एक छात्र को सिगरेट पीने की आदत थी। एक दिन जब वह सिगरेट पी रहा था तभी एक शिक्षक ने उसे देख लिया। उन्होंने छात्र से कहा - सिगरेट पीते हो तो बहुत अच्छा करते हो। यह सुनकर छात्र को बहुत आश्चर्य हुआ। उसने अपने शिक्षक से पूछा - सर ! यह अच्छा काम कैसे है? शिक्षक ने कहा - सिगरेट पीने के तीन लाभ हैं - 1. सिगरेट पीने वाले के यहाँ चोरी नहीं होती 2. उसे कुत्ता नहीं काटता 3. वह कभी बूढ़ा नहीं होता। यह सुनकर छात्र को और जानने की इच्छा हुई। उसने पूछा - सर! ऐसे कैसे हो सकता है? शिक्षक ने कहा - देखो! सिगरेट पीने से फेंफड़े खराब हो जाते हैं और वह रात भर खांसता रहता है तो चोर घर में नहीं आयेंगे। दूसरा सिगरेट पीने वाले व्यक्ति का शरीर जल्दी कमजोर हो जाता है इसलिये उसे चलने के लिये लकड़ी की जरूरत होती है। जब हाथ लकड़ी आ जायेगी तो उसे कुत्ता नहीं काट सकेगा। तीसरे सिगरेट पीने वाले को जब बीमारी हो जायेंगी तो वह जवानी में ही मर जायेगा तो बुढ़ापा नहीं आयेगा। शिक्षक की इतनी बात सुनकर छात्र शर्मिन्दा हो गया और उसने भविष्य में सिगरेट न पीने की प्रतिज्ञा की।

जन्मदिवस की मंगल शुभकामनायें

जन्म-मरण के अभाव की भावना में जन्म दिवस मनाने की सार्थकता है।

केवल अपना ज्ञान हो,
केवलज्ञान अभिराम।
जग में धीरज धारिये,
है जैनधर्म वरदान।।

केवल धीरज दोशी, 10 नवम्बर 2016

सहज स्वभाव को धारिये,
सहज वस्तु का भाव।
यही भावना जन्म दिवस पर,
मेटो सकल विभाव।।

सहज संजय जैन, टीकमगढ़ म.प्र. 28-11-2016

जिनवाणी पथ पर चलो
धारण करो श्रुतेश।
जिनवचनों का श्रद्धान ही
करे सिद्ध सम वेश।।

श्रुतेश सचिन दोशी,
नातेपुते महा. 15-11-2016

गीत गाईये आत्म,
वीतराग शिर नाय।
भाव्य भावना भाईये,
वापस जगत न आयें।।

भाव्य परेश दोसी, फलटण 23-11-2016

मानुष भव उत्तम मिला,
छोड़ो भव का पन्थ।
उर विवेक जाग्रत करो,
मार्ग चलो निर्ग्रन्थ।।

निर्ग्रन्थ विवेक जैन, पिड़ावा राज.
दुर्ग 6 सितम्बर 2016

जिनकुल में शुभ आगमन,
स्वागत करे जहान।
ब्राह्मी सुन्दरी सा जीवन लख,
करो भेद विज्ञान।।

डॉ. मोना एवं डॉ. रोहित को 15 सितम्बर को अनन्तचतुर्दशी पर प्रथम पुत्री रत्न की प्राप्ति होने पर बधाई।

भेद ज्ञान की सिद्धि हो, पद पाओ अभिराम।
सीता सा साहस धरो, दुनिया करे प्रणाम।।

सिद्धि राहुल दोशी 21 नवम्बर 2016

किसी को जन्म दिवस की शुभकामनायें देते समय कभी आपने सोचा कि आप किस बात की शुभकामनायें दे रहे हैं। हैप्पी बर्थ डे, **Many Many Happy Return Of The Day** कहकर और बार बार ये दिन आये तुम जियो हजारों साल ये है मेरी आरजू ..... जैसे गीत गाकर आप उसके चतुर्गति में घूमने की भावना भा रहे हैं। अनादि काल से अपनी आत्मा को नहीं पहचानने के कारण अनन्तों बार जन्म-मरण का दुःख भोगना पड़ा है और फिर वही भावना। मनुष्य भव बहुत दुर्लभता से मिला है अब इसका उपयोग देव-शास्त्र-गुरु की भक्ति और स्वरूप की साधना में होना चाहिये और हमें अपने प्रिय के प्रति भी यही भावना भाना चाहिये। जन्म दिवस पर यह भावना भाईये।

जल्दी से भगवान बनो तुम। अब अपना कल्याण करो तुम।
जन्म-मरण का नाश करो तुम।सिद्ध शिला पर वास करो तुम।
देव-शास्त्र-गुरु पास रहो तुम।पाप भाव से दूर रहो तुम।
भेद ज्ञान अभ्यास करो तुम।सिद्ध शिला पर वास करो तुम।।

- संपादक

बच्चे की जान बचाने के लिये कूदे 10 बंदर

प्रत्येक संज्ञी पंचेन्द्रिय प्राणी में अपने जन्म के एक निश्चित समय के बाद अपना भला-बुरा विचार करने की शक्ति प्रगट हो जाती है और सम्यग्दर्शन प्राप्त कर सकता है - ऐसा आगम में कथन मिलता है। यह संवेदना जानवरों में भी पाई जाती है। प्रत्येक गति के सम्बन्ध में अलग-अलग नियम है।

विगत जुलाई महीने में उत्तराखण्ड राज्य के देहरादून के चंपावत गांव में बहुत तेज बारिश हो रही थी तभी एक टैंक में एक बन्दर का बच्चा फिसलकर गिर गया। अपने बच्चे को बचाने के लिये माँ भी उसी टैंक में कूद गई। यह देखकर दूसरे बन्दर वहाँ एकत्रित हो गये और एक-एक करके 10 बन्दर उस बच्चे को बचाने के लिये कूदे परन्तु टैंक में अधिक गहराई होने के कारण सभी बन्दर मर गये।

पशुओं में वात्सल्य का अनूठा उदाहरण।

अपने मालिक का इंतजार कर रहा है यह कुत्ता

ब्राजील के फलारियानपोलिस शहर में रूथ कारडोसो नाम का एक हॉस्पिटल है। इस हॉस्पिटल के बाहर एक काले रंग का कुत्ता पिछले 8 महीने से अपने मालिक का इंतजार कर रहा है। इस कुत्ते के मालिक को 8 महीने पूर्व इलाज कराने के लिये एम्बुलेंस में लाया गया। यह कुत्ता उस एम्बुलेंस के पीछे-पीछे भागता आया। कुछ समय बाद उसके मालिक की मृत्यु हो गई लेकिन उसका कुत्ता उसी दिन से हॉस्पिटल के बाहर खड़े रहकर अपने मालिक का बाहर इंतजार कर रहा है। कई बार इसे दूर छोड़ा गया पर वह वापस यहीं आ गया।

हॉस्पिटल का स्टॉफ ही इस कुत्ते के भोजन आदि की व्यवस्था करता है।

5000 किमी दूर से मिलने आता है यह पेंग्विन

ब्राजील के रियो डी जेनेरियो के बीच पर 71 वर्षीय जाओ पेरिरा डी सूजा को एक पेंग्विन मिला। वह तेल में लथपथ और भूखा था। जाओ उसे अपने घर ले गये और उसकी सेवा की और उसका नाम डिनडिम रखा। उसके पूर्ण स्वस्थ हो जाने के बाद उसे वापस समुद्र में छोड़ दिया। जाओ ने सोचा था कि अब दुबारा कभी डिनडिम से मुलाकात नहीं होगी। परन्तु आश्चर्यकारी बात यह रही कि डिनडिम मात्र पाँच माह बाद वापस जाओ के पास आ गया। पिछले पाँच वर्षों से यह डिनडिम नाम का पेंग्विन हर साल 5000 किमी की यात्रा करके जाओ से मिलने आता है। डिनडिम वर्ष में आठ महीने जाओ के पास गुजारता है और शेष चार महीने 5000 किमी दूर अर्जेंटीना और चिली के तट पर गुजारता है। अब डिनडिम जाओ के बेटे जैसा हो गया है। वह अपने प्राण बचाने वाले जाओ के प्रति उपकार प्रदर्शित करता है और साथ में खेलता है। अपने मालिक की आवाज पहचानता है और बहुत खुश रहता है। किसी उपकारी का उपकार मानना भी एक बहुत बड़ा गुण है।

चहकती चेतना के गौरवशाली 10 वर्ष पूरे होने पर

पाठकों और सहयोगियों का आभार

आज से लगभग 10 वर्ष सहज ही एक भावना हुई कि समाज में सभी प्रौढ़ युवा वर्ग के लिये धार्मिक सामग्री सीडी प्रवचन, विशाल साहित्य, अनेक पत्रिकायें उपलब्ध हैं परन्तु बच्चों को जिनधर्म के संस्कार देने के लिये कोई पत्रिका उपलब्ध नहीं है। बाल वर्ग को भी रोचक विधि से जिनधर्म के संस्कार मिलें - इस भावना से अल्प संसाधन में इस पत्रिका का प्रकाशन प्रारम्भ किया। जगत की विधि के अनुसार अनेक लोगों ने विरोध किया और निराश करने का प्रयास किया परन्तु एक संकल्प शक्ति के साथ हम आगे बढ़ते रहे और सफलता के साथ साधर्मियों का सहयोग मिलना प्रारम्भ हुआ और शनैःशनैः प्रकाशन आगे बढ़ता रहा और हम इस अंक के साथ प्रकाशन का गौरवमयी दसवाँ वर्ष पूर्ण कर रहे हैं। संस्था अपने सदस्यों को यह पत्रिका लागत राशि से कम में उपलब्ध करवा रही है। इस अवधि में जिन साधर्मियों का हमें तन-मन-धन से सहयोग प्राप्त हुआ उन सभी का हृदय से आभार व्यक्त करते हैं। जिन सुधी पाठकों के स्नेह और विश्वास से हमें सम्बल मिला उन सभी का भी आभार।

- **विराग शास्त्री** (संपादक)

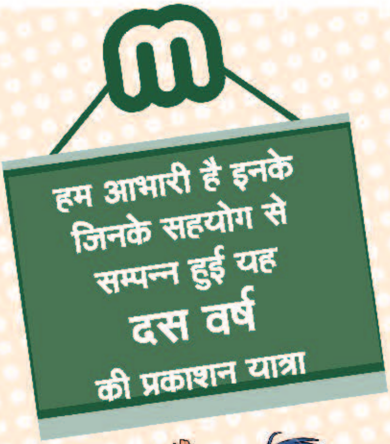

- **सूरज बेन अमुलखराय सेठ स्मृति ट्रस्ट**, मुम्बई
- **श्रीमति आरती पुष्पराज जैन**, कन्नौज उ.प्र.
- **श्रीमति स्नेहलता जैन धर्मपत्नि श्री जैन बहादुर जैन**, कानपुर
- **श्री प्रेमचन्दजी बजाज**, कोटा राज.
- **श्री सुनील भाई जे. शाह**, भायन्दर, मुम्बई
- **श्री ब्रजलाल दलीचन्दजी हथाया परिवार**, ग्रान्ट रोड, मुम्बई
- **श्री विनोद जैन**, जयपुर राज.
- **श्री आत्मदीप भूपेन्द्रभाई भायाणी**, चेन्नई.
- **श्री राजूभाई एम. जैन**, दादर मुम्बई
- **श्री सुरेन्द्रजी पाटोदी**, कोलकाता
- **श्री भरतभाई टिम्बड़िया**, कोलकाता
- **श्री दिलीपभाई सेठी**, कोलकाता
- **श्री आलोक जैन**, कानपुर उ.प्र.
- **श्री देवेन्द्र जैन बड़कुल**, भोपाल म.प्र.
- **डॉ. धनकुमार जैन**, सूरत गुज.
- **श्री नरेन्द्रकुमार जैन**, जबलपुर
- **श्रीमति हंसा जी विजय जी पामेचा**, जबलपुर
- **श्री संजय जैन**, जबलपुर

शोक समाचार

वाशिम निवासी **श्रीमती कमला बाई भंवरीलाल जी झांझरी** का स्वर्गवास **दिनांक 2 अगस्त 2016** को शांत परिणामों से हुआ। आप वीतरागी देवशास्त्र गुरु की उपासक एवं नियमित स्वाध्यायी थीं। आपका पूरा परिवार धार्मिक रुचिवंत है। दिवंगत आत्मा के प्रति अभ्युदय की मंगल कामना।

सर्वज्ञ शासन जयवन्त वर्तें   निर्ग्रन्थ शासन जयवन्त वर्तें

महामहोत्सव   मंगल क्षण   विद्वतसमागम

मंगल आमंत्रण

मध्यप्रदेश की धर्मनगरी गुना में नवनिर्मित पंचतीर्थ पहाड़ी पर वर्तमान चौबीसी एवं नवीन वेदी के जिनबिम्बों का

श्री १००८ नेमिनाथ दिगम्बर जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव

रविवार, दिनांक 25 दिसम्बर से शुक्रवार, दिनांक 30 दिसम्बर 2016

स्थान : शौरीपुर नगरी, सोनी कॉलोनी, गुना (म.प्र.)

25 दिसम्बर
गर्भ कल्याणक की पूर्व क्रिया

26 दिसम्बर
गर्भ कल्याणक

27 दिसम्बर
जन्म कल्याणक

28 दिसम्बर
तप कल्याणक

29 दिसम्बर
ज्ञान कल्याणक

30 दिसम्बर
मोक्ष कल्याणक

प्रतिष्ठाचार्य : बाल ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री- दिल्ली

निर्देशक : श्री रजनीभाई दोसी, हिम्मतनगर गुज.

अध्यक्ष : श्री अशोक कुमारजी बड़जात्या, इन्दौर

कार्याध्यक्ष : श्री विनयकुमारजी एड.

महामंत्री : श्री शैलेन्द्र जैन

संयोजक द्वय – श्री अनुराग जैन, श्री अमित जैन

आयोजक

श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल, गुना

श्री दिगम्बर जैन वीतराग विज्ञान भवन न्यास

अध्यक्ष : श्री मथुराप्रसाद जैन मड़वरिया (एडवोकेट)   मंत्री: श्री बाबूलाल बांझल

निवेदक : **अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन,** श्री वर्धमान दिगम्बर जिनमंदिर नई सड़क, गुना (म.प्र.)

विनीत : श्री 1008 नेमिनाथ दिगम्बर जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महामहोत्सव समिति

शौरीपुर नगरी, सोनी कॉलोनी, गुना म.प्र. सम्पर्क : 9425632909, 9425758744

आवास प्रमुख – **पण्डित श्री सुकुमालजी जैन** अध्यक्ष – **जैन युवा फैडरेशन,** गुना मोबा. **9993272202, 9993839469**

MANGALAYATAN UNIVERSITY

Learn Today to Lead Tomorrow

10 YEARS OF EXCELLENCE

DEDICATED TO FOSTERING JAIN CULTURE

FOR ALL JAIN STUDENTS 40% SCHOLARSHIP PER YEAR

THE MAGNIFICENT JAIN TEMPLE INSIDE THE CAMPUS
Facility for Worship & Religious Discussion

100% PURE VEGETARIAN FOOD
Even available before sunset

Attractive Scholarships for Jain & Other Students | Separate Hostel for Girls Students | Wi-fi enabled campus | 24 hours Electricity & Water facility | Jain Darshan & Science Centre established for promotion & study of Jain Culture (Dean for the Program - Dr. Hukamchand Bharill)

60+ Courses Offered

- Engineering • Management • Biomedical • Computer Application • Polytechnic • Law • Applied Sciences • Architecture & Planning • Journalism & Mass Communication • Visual & Performing Arts • Humanities • Tourism & Hospitality • Philosophical Sciences

Campus: Extended NCR, 33rd Milestone, Mathura-Aligarh Highway, Beswan Aligarh-202145 (U.P) Ph: 9319888888, 5713258592, 7351002561
E-mail: admissions@mangalayatan.edu.in | www.mangalayatan.edu.in | Toll Free No: 1800 274 4000 | SMS MUA to 56070